हरिभूमि
झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि
रोहतक, रविवार, 14 सितंबर 2025

11 स्टेडियम में चरमराई सफाई व्यवस्था

12 प्रतियोगिताओं में हिंदी का महत्व किया उजागर

खबर संक्षेप

दो प्रवासी युवकों की मौत जांच में जुटी पुलिस

बहादुरगढ़। शहर में अलग-अलग स्थानों पर दो प्रवासी युवकों की मौत हो गई। एक की ट्रेन की चपेट में आने से मौत हुई तो दूसरे द्वारा फांसी लगाने की बात सामने आई है। पुलिस ने पोस्टमार्टम करा शव परिजनों को सौंप दिए हैं। पहली घटना यहां दुर्गा कॉलोनी की है। यूपी मूल का करीब 21 वर्षीय धीरेंद्र पिछले कुछ समय से यहां अपने पिता के साथ दुर्गा कॉलोनी में रह रहा था। एक कंपनी में काम करता था। शुक्रवार को उसका शव फंदे पर लटका हुआ मिला। जब तक किसी की नजर पड़ती, देर हो चुकी थी। लाइनपार थाना पुलिस ने मामले में कार्रवाई करते हुए शनिवार को शव का पोस्टमार्टम करा दिया। वह तीन भाई बहनों में सबसे छोटा था। वहीं, दूसरी तरफ एचएनजी के निकट रेलवे लाइन पर एक युवक का शव शुक्रवार की रात को मिला। मृतक की पहचान करीब 28 वर्षीय नीरज के रूप में हुआ। मूलतः दिल्ली से था और यहां परनाला में रहता था। कबाड़ी का काम करता था। शुक्रवार की सुबह घर से निकला था लेकिन वापस नहीं लौटा। एचएनजी के निकट ट्रेन की चपेट में आने से उसकी जान चली गई।

सांखोल में मिले शव की शिनाख्त

बहादुरगढ़। गांव सांखोल में सड़क पर मृत मिले युवक की शिनाख्त हो गई। पुलिस ने पोस्टमार्टम करा शव परिजनों को सौंप दिया है। मृतक की पहचान करीब 20 वर्षीय कुंदन के रूप में हुई है। मूलतः बिहार के आरा जिले से था। यहां धर्मपुरा में रहता था और रिलेक्सो कंपनी में काम करता था। जानकारी के अनुसार, दस सितंबर की सुबह वह ड्यूटी के लिए घर से गया था। कंपनी में पहुंचा भी लेकिन एक घंटे बाद वहां से निकल गया। इसके बाद शाम को उसका शव सांखोल में एक दुकान के बाहर मिला।

दो आरोपियों से दो पिस्तौल और नौ कारतूस बरामद

बहादुरगढ़। पुलिस की अपराध जांच शाखा ने अवैध हथियार सहित दो युवकों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों से दो हथियार सहित 9 कारतूस बरामद हुए हैं। इनके खिलाफ बादली व लाइनपार थाने में केस दर्ज किए गए हैं। पहली कार्रवाई में टीम ने नाहरा–नाहरी रोड चोर प्याऊ के पास नाकाबंदी की। यहां से परनाला के निवासी हर्ष को पकड़ा गया। तलाशी के दौरान उसके पास से एक पिस्टल और एक कारतूस मिला। आरोपी के खिलाफ थाना लाइनपार में मामला दर्ज किया गया। दूसरी कार्रवाई में थाना बादली एरिया में लाडपुर मोड़ बाईपास पर नाकाबंदी की। वहां से लाडपुर के निवासी संदीप को काबू किया गया। तलाशी में उसके पास से एक पिस्टल और आठ कारतूस मिले। उसके खिलाफ बादली में केस दर्ज किया गया।

संदिग्ध परिस्थितियों में महिला की मौत

झज्जर। खेतों में कार्य करते समय संदिग्ध परिस्थतियों में एक महिला की मौत हो गई। मृतका की पहचान बिठला गांव निवासी करीब 55 वर्षीया सुशीला के तौर पर हुई है। अस्पताल परिसर में उपस्थित परिजनों ने बताया कि शुक्रवार को सुशीला अपने पति के साथ मिलकर खेत में कार्य कर रही थी। अचानक उसकी तबीयत बिगड़ी तो परिजन उसे जमालपुर के सरकारी अस्पताल लेकर पहुंचे। चिकित्सकों ने उसे प्राथमिक उपचार के बाद स्थानीय नागरिक अस्पताल रैफर कर दिया। जब परिजन उसे अस्पताल लेकर आए तो यहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इसके बाद पुलिस ने अस्पताल पहुंच कर परिजनों से मामले की जानकारी लेते हुए शव को पोस्टमार्टम के लिए शवगृह में रखवाया। मामले के जांच अधिकारी महेश कुमार ने बताया कि शनिवार को पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है। पुलिस ने महिला के पति के बयान दर्ज किए।

नूना माजरा की श्वेता का हरियाणा की फुटबॉल टीम में हुआ चयन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

गांव नूना माजरा की बेटी श्वेता राष्ट्रीय फुटबॉल चैंपियनशिप में हरियाणा का प्रतिनिधित्व करेगी। श्वेता पुत्री रमेश कुमार का राज्य की टीम में चयन हो गया है। वह टीम में गोलकीपर की पोजीशन पर खेलेगी। उसके चयन पर परिजनों, खेल प्रेमियों और एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने खुशी जताई है। यह प्रतियोगिता उत्तराखंड के हल्द्वानी में आयोजित हो रही है। चैंपियनशिप में हरियाणा का पहला मुकाबला 14 सितंबर को दिल्ली के साथ होगा, जबकि दूसरा मैच 16 सितंबर को मेज़बान उत्तराखंड टीम के साथ खेला जाएगा। विजेता टीम अगले दौर में प्रवेश करेगी।

खेलप्रेमियों ने श्वेता को दी शुभकामनाएं

श्वेता फुटबॉल कोच मनीषा जांगड़ा के मार्गदर्शन में मेहनत करती है। उसके टीम में चयन पर कोच, एसोसिएशन व खेलप्रेमियों ने खुशी जताई है। हरियाणा कुश्ती संघ के महासचिव डॉ. राकेश सांगवान, डीएफए झज्जर प्रधान सूबे सिंह, सचिव सुरेश जून, फुटबॉल कोच सुदर्शन, पीटीआई जितेंद्र जून, सीनियर खिलाड़ी मुकेश गुलिया, मुकेश दलाल, सीनियर वाइस प्रेसिडेंट आरएमएस जून, कोच मोहित, सुमित, नवदीप, सुनीता आदि ने श्वेता को शुभकामनाएं दी हैं। सुरेश जून ने कहा कि श्वेता बेहद होनहार खिलाड़ी है। यकीनन अपने शानदार खेल से टीम को जीत दिलाने में अहम किरदार

स्टेट चैंपियनशिप में हिंद केसरी सोनू अखाड़े के पहलवानों ने छह गोल्ड सहित आठ पदक जीते

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

पानीपत में हरियाणा स्कूल स्टेट गेम्स के तहत हुई कुश्ती प्रतियोगिता में हिंद केसरी सोनू अखाड़े के पहलवान छाए रहे। शानदार प्रदर्शन करते हुए अखाड़े के पहलवानों ने छह गोल्ड सहित कुल आठ मेडल जीते। इनकी जीत पर कुश्ती प्रेमियों और साथी पहलवानों ने खुशी जताई है। विजेताओं का अखाड़े में अभिनंदन किया गया। यह राज्य स्तरीय स्कूल खेल प्रतियोगिता सात से दस सितंबर तक हुई थी। प्रदेशभर के पहलवानों ने जोर आजमाइश की। मांडोठी स्थित हिंद केसरी सोनू अखाड़े के पहलवानों ने भी इसमें भाग लेकर जबरदस्त प्रदर्शन किया।

प्रतियोगिता में इन पहलवानों ने जिले का नाम रोशन किया

पहलवान सचिन दलाल ने अंडर-14 आयुवर्ग के 48 केजी फ्रीस्टाइल भारवर्ग तथा दक्ष दलाल ने 65 किलोग्राम भारवर्ग में गोल्ड मेडल जीते। अंडर-17 में सावन ने 55 केजी फ्री स्टाइल में गोल्ड पर कब्जा जमाया। इसी तरह अंडर-19 ग्रीको रोमन के 72 केजी में विकास, 130 केजी में अनुज ने गोल्ड जीते। फ्री स्टाइल 125 केजी में अमन ने गोल्ड पर कब्जा जमाया। जबकि 77 केजी ग्रीको में मोहित व 82 केजी ग्रीको में अजय ने सिलवर मेडल हासिल किए। इनकी जीत पर साथी पहलवानों ने खुशी जताई। एसीपी प्रदीप खत्री, तेजा पहलवान, हिंद केसरी सोनू पहलवान, अर्जुन अवॉर्डी कोच ओमबीर सिंह, कॉमनवेल्थ चैंपियन धर्मेंद्र दलाल ने विजेताओं को बधाई दी ।

छोटूराम नगर में 11 दिन बाद भी हालात जस के तस, बच्चे स्कूल तक नहीं जा पा रहे

जलभराव से जिंदगी 'नर्क', निकासी की रस्म अदायगी लोगों को चुभ रही

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

शहर का छोटूराम नगर क्षेत्र इन दिनों बदहाल स्थिति से गुजर रहा है। पिछले 11 दिनों से लगातार जमा गंदे पानी ने लोगों की जिंदगी को नरक बना दिया है। इलाके में हालात ऐसे हैं कि घरों से निकलना मुश्किल हो गया है। गलियों और मुख्य रास्तों पर घुटनों तक पानी भरा है, जिससे बच्चों का स्कूल जाना, लोगों का ऑफिस और मरीजों का अस्पताल तक पहुंचना भी चुनौती बन गया है।

लोग घरों में कैद

पूर्व पार्षद हरिमोहन धाकरे के अनुसार कई घरों में पानी अंदर घुसने से फर्नीचर और सामान खराब हो चुका है। महिलाएं और बुजुर्ग घरों में कैद होकर रह गए हैं। लोग मजबूरी में गंदे पानी से होकर निकलते हैं, जिससे संक्रमण का खतरा और बढ़ गया है। क्षेत्रवासियों ने नगर परिषद और प्रशासन पर गंभीर लापरवाही का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि नेता-अधिकारी यहां आ रहे हैं और फोटो खिंचवा कर जा रहे हैं। इसके बावजूद जलनिकासी के लिए कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। मात्र औपचारिकता निभाने के लिए एक-दो बार पंपिंग सेट लगाए गए लेकिन स्थिति जस की तस है।

बहादुरगढ़। छोटूराम नगर में भरे गंदे पानी की निकासी में जुटी टीम।

लोगों का आरोप : प्रशासन सिर्फ आश्वासन दे रहा

लोगों का आरोप है कि प्रशासन सिर्फ आश्वासन दे रहा है, जबकि जमीनी स्तर पर कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। स्थानीय दुकानदार बताते हैं कि जलभराव के कारण उनका कारोबार ठप हो गया है। दुकान तक ग्राहक पहुंच ही नहीं पा रहे। हरीश, रामनारायण, मनोज, चंद्रशेखर आदि ने बताया कि गंदे पानी के 11 दिन से भरा होने के कारण डेंगू, मलेरिया, टाइफाइड जैसी बीमारियों फैलने का खतरा बढ़ गया है। कई लोग पहले ही बुखार और त्वचा संबंधी परेशानियों से जूझ रहे हैं। प्रभावित लोगों ने कहा कि 11 दिन हो चुके हैं, अब उनकी सहनशीलता जवाब देने लगी है। नाराज लोगों का कहना है कि हर बार थोड़ी-सी बारिश में छोटू राम नगर जलमग्न हो जाता है। प्रशासन को मुंगेशपुर ड्रेन के किनारों को मजबूत करना चाहिए, ताकि स्थायी समाधान हो सके। केवल अस्थाई पंपिंग से समस्या हल नहीं होगी।

गेहूं बिजाई पर भी संकट : छुड़ानी समेत कई गांवों के खेतों में अभी भी कई-कई फुट पानी

बहादुरगढ़। गांव छुड़ानी में जलभराव का निरीक्षण करते एसडीएम नसीब कुमार।

बहादुरगढ़। गांव छुड़ानी समेत अन्य गांवों में डूबी हजारों एकड़ फसल से पानी निकासी अब तक शुरू नही हुई है। खेतों में 4-5 फीट तक पानी भरा हुआ है। छुड़ानी के खेतों में बने कोठड़े और सोलर पंप सैट भी पानी में डूब चुके हैं। किसानों को डर सता रहा है कि अब गेहूं की फसल की बिजाई भी हो पाएगी या नही। शनिवार को एसडीएम नसीब कुमार ने बीडीपीओ और नायब तहसीलदार के साथ प्रभावित गांवों में जलमग्न खेतों का मुआयना किया।

प्रशासन की लापरवाही से मेहनत पर पानी फिर गया

किसान अजीत सिहं, लाला व जगदीश ने बताया कि गांव छुड़ानी में प्रशासन की बेपरवाही किसानों की मेहनत पर पानी फिर गई। खेतों में धान की बढ़िया फसल लहलहा रही थी, लेकिन सिंचाई विभाग और प्रशासन ने मातन लिंक ड्रेन से पानी की पंपिंग बंद करवा दी। यह सारा पानी छुड़ानी के खेतों में जमा हो गया। केसीबी ड्रेन का जलस्तर भी नीचे आ चुका है। बावजूद इसके मातन लिंक ड्रेन से पानी की पंपिंग शुरू नही हुई है। वे पोर्टल पर भी अपने नुकसान की रिपोर्ट दर्ज करवा चुके हैं, लेकिन अब तक ना तो प्रशासन की तरफ से कोई राहत आई और ना ही सरकार ने कुछ किया है। जलभराव के दोषी अधिकारियों के खिलाफ भी सख्त कार्यवाही होनी चाहिए।

आरएएफ व पुलिस ने गांवों तथा शहर में निकाला मार्च

बहादुरगढ़। इलाके में मार्च निकालती आरएएफ व पुलिस टीम।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

कानून-व्यवस्था को मजबूत बनाए रखने और आमजन में सुरक्षा की भावना जगाने के लिए झज्जर पुलिस और रेपिड एक्शन फोर्स ने संयुक्त रूप से रूट मार्च निकाला। लाइनपार, सेक्टर-6, शहर थाना व आसौदा थाना क्षेत्र में मार्च निकालकर लोगों को जागरूक किया गया।

नई दिल्ली से आई आरएएफ की सी/194 टीम ने कमांडेंट किशोर कुमार के निर्देशन और सहायक कमांडेंट राजेश कुमार पांडेय के नेतृत्व में स्थानीय पुलिस के साथ यह रूट मार्च किया। दल ने शहर व शहर के विभिन्न थाना क्षेत्रों में मुख्य बाजारों, भीड़भाड़ वाले इलाकों और संवेदनशील स्थानों का दौरा कर स्थिति का जायजा लिया। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि

आपात स्थिति में त्वरित कार्रवाई कर सकेंगे

मार्च में आसौदा थाना प्रभारी अमित कुमार, सेक्टर-6 एसएचओ दीपक कुमार, लाइनपार के एसएचओ परमजीत सिंह, सिटी थाना प्रभारी दिनकर यादव और सदर थाना एसएचओ इंस्पेक्टर दिलबाग सिंह अपनी टीमों के साथ शामिल थे। अधिकारियों ने बताया कि गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार समय-समय पर ऐसे अभियान चलाए जाते हैं, ताकि किसी भी आपात स्थिति में आरएएफ व जिला पुलिस मिलकर त्वरित कार्रवाई कर सकें।

ऐसे रूट मार्च का उद्देश्य क्षेत्र में शांति बनाए रखना और आम जनमानस में सौहार्द का वातावरण मजबूत करना है। सुरक्षा बलों की संयुक्त मौजूदगी से लोगों में भरोसा और अधिक गहरा हुआ।

दो दिवसीय दाखिला प्रक्रिया संपन्न, कई खाली हाथ लौटे

झज्जर। स्टेट इंस्टीटयूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज इन टीचर एजूकेशन में दो दिन से चल रही दाखिला प्रकिया शनिवार को संपन्न हो गई। एडमिशन कमेटी कंवीनर डॉक्टर बिजेंद्र व डॉक्टर रीना तक्षक ने बताया कि संस्थान में 100 सीटों पर काउंसलिंग प्रक्रिया कराई जा रही थी। संस्थान में बीएबीएड और बीएससीबीएड में दाखिला लेने के लिए अभ्यर्थी भारत के विभिन्न राज्य जैसे राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, त्रिपुरा, से आए हुए थे। उन्होंने बताया कि निश्चित सीट होने के कारण कई अभ्यर्थियों को खाली हाथ ही लौटना पड़ा।

हवा सिंह के हत्यारोपी से पूछताछ पूरी, अदालत ने न्यायिक हिरासत में भेजा

बहादुरगढ़। बादली थाना पुलिस ने जनवरी 2025 में गांव छुड़ानी निवासी हवा सिंह की हत्या और रवि दत्त पर जानलेवा हमला करने के मामले में एक आरोपी को पुलिस प्रोडक्शन वारंट पर लेकर गिरफ्तार किया।

पूछताछ के बाद उसे जेल भेज दिया। बादली थाना प्रभारी सुरेश कुमार के अनुसार, रवि दत्त निवासी छुड़ानी ने शिकायत देते हुए बताया कि 18 जनवरी को मैं अपनी दुकान पर बैठा हुआ था। उसी समय दो लड़के मोटरसाइकिल पर सवार होकर दुकान पर आए और बोले की एक को तो मार दिया है, अब तेरी बारी है। ऐसा कहते ही उन्होंने गोली चला दी। संयोगवश गोली नहीं लगी और आरोपी भाग गए। इसके बाद पता चला कि मेरे गांव के हवा सिंह को भी गोली मारी गई है। दर्ज मामले में कार्रवाई करते हुए साहिल निवासी पाई जिला कैथल को पूछताछ के लिए एक दिन के प्रोडक्शन वांरट पर लिया। पूछताछ के दौरान आरोपी ने वारदात का खुलासा किया। इस दौरान वारदात में प्रयोग की गई मोटरसाइकिल भी बरामद की गई।

आरोपी पर पहले भी थाना पुंडरी में लड़ाई झगड़ा, जानलेवा हमला करने सहित विभिन्न धाराओं के तहत तीन आपराधिक मामले दर्ज हैं।

सुबह 7 से 11 और शाम 5 से 9 बजे तक शहर में भारी वाहनों पर रोक, कल से लागू होगा ट्रैफिक प्लान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

यातायात व्यवस्था को सुगम और सुचारू रूप से चलाने के लिए पुलिस कमिश्नर डॉ राजश्री सिंह के दिशा निर्देशन पर एक विशेष समय सारणी बनाई गई है। जिसके अनुसार सुबह 7 से 11 और शाम को 5 से 9 बजे तक भारी वाहनों का शहर में प्रवेश वर्जित रहेगा। यह व्यवस्था सोमवार से पूरी तरह लागू हो जाएगी। यातायात थाना प्रबंधक महेश कुमार और आरएसओ रविंद्र सैनी ने चिह्नित किए गए स्थानों पर दिशानिर्देशक बोर्ड भी लगा दिए हैं। ताकि इससे वाहन चालकों को पहले ही पता चल जाए और उन्हें किसी प्रकार की समस्या का सामना ना करना पड़े। इस समयावधि के दौरान पुलिस वाहन, दमकल वाहन, एंबुलेंस, सेना व अर्ध सैनिक बलों से संबंधित वाहनों पर यह नियम लागू नहीं होगा। रविवार को भी इस प्रतिबंध में छूट मिलेगी। यह नियम 15 सितंबर से प्रभावी ढंग से लागू किया जाएगा। हालांकि किसी आकस्मिक स्थिति के मद्देनजर आवश्यकता अनुसार इसमें परिवर्तन किया जा सकता है।

बहादुरगढ़ में यहां लागू रहेगी रोक

- रोहतक-दिल्ली रोड पर सांखोल गांव से पहले बराही मोड़ के बाद बहादुरगढ़ शहर में भारी वाहनों पर प्रतिबंध
- मेट्रो पिलर नंबर 804-805 के बीच विवेकानंद नगर मोड़, आरजे हॉस्पिटल, एसआर सेंचुरी स्कूल, ब्रह्म शक्ति हॉस्पिटल, सिटी मेट्रो स्टेशन से शहर में प्रवेश नहीं कर सकेंगे
- बेरी रोड बाईपास फ्लाईवर के नीचे पीडीएम कॉलेज, सेक्टर-2 से शहर में प्रवेश पर प्रतिबंध रहेगा
- झज्जर रोड बाईपास फ्लाईओवर के नीचे से ओमेक्स सिटी, बादली चुंगी, सब्जी मंडी बहादुरगढ़ से शहर में प्रवेश पर प्रतिबंध रहेगा।
- बादली रोड पर नया गांव बाईपास फ्लाईओवर के नीचे से अंबेडकर स्टेडियम, बादली चुंगी से शहर की तरफ प्रवेश करने वाले मार्ग पर प्रतिबंध रहेगा।
- नजफगढ़ रोड बाइपास फ्लाईओवर के नीचे से बालाजी मंदिर, हरदयाल पब्लिक स्कूल, बालोर चुंगी से शहर में प्रवेश पर प्रतिबंध रहेगा।
- नाहरा-नाहरी रोड से बीकानेर चौक, हाई स्कूल से शहर की तरफ प्रवेश करने वाले मार्गों पर भी प्रतिबंध
- . सिद्धीपुर रोड बाईपास फ्लाईओवर के नीचे से गांव बालौर, लघु सचिवालय से शहर में प्रवेश पर प्रतिबंध

मां के हत्यारोपी बेटे को पकड़ने के लिए चार टीमों का गठन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

- पीजीआई में चिकित्सकीय बोर्ड द्वारा कराया गया कृष्णा देवी के शव का पोस्टमार्टम

कस्बा बेरी के हिंदयाण पाना में बेटे द्वारा की गई मां की हत्या मामले में शनिवार को मृतका के शव का पोस्टमार्टम कराया गया। मामले के जांच अधिकारी सतबीर ने बताया कि परिजनों द्वारा चिकित्सकीय बोर्ड से पोस्टमार्टम कराने की मांग पर शव को पीजीआई रोहतक ले जाया गया। यहां बोर्ड से पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है।

घर में मिला था शव : उन्होंने बताया कि आरोपी को पकड़ने के लिए पुलिस द्वारा चार टीमों का गठन किया गया है। पुलिस द्वारा नियमानुसार आगामी कार्रवाई अमल में लाई जा रही है। बता दें कि बेरी के हिंदयाण पाना में करीब 63 वर्षीया महिला कृष्णा देवी पत्नी रघबीर का शव लहूलुहान हालत में फर्श पर पड़ा था। सूचना मिलने के बाद पुलिस एफएसएल टीम के साथ मौके पर पहुंची तथा ग्रामीणों से मामले की जानकारी लेते हुए शव को पोस्टमार्टम के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल भिजवाया था। मृतका के दूसरे पुत्र धर्मपाल ने पुलिस को दी शिकायत में अपने भाई कर्मबीर को मां की हत्या का जिम्मेवार ठहराया था। जिसके बाद पुलिस ने मामला दर्ज किया था। सीआरपीएफ में तैनात धर्मपाल के देर से पहुंचने के कारण शव का पोस्टमार्टम नहीं हो पाया था।

फ्लेक्सी कैप, मिड कैप और लार्ज कैप फंड्स में बढ़ा निवेश

■ इक्विटी फंड्स का नेट इनफ्लो 22% तक घटा ■ एएमएफआई ने अगस्त 2025 के आंकड़े जारी किए ■ अगस्त 2025 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के लिए मिला-जुला महीना रहा

बिजनेस डेस्क

एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) ने अगस्त 2025 के निवेश और रिडेम्पशन के लेटेस्ट आंकड़े जारी कर दिए हैं। ये आंकड़े म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री के ताजा रुझानों की दिलचस्प तस्वीर पेश करते हैं। अगस्त 2025 में निवेशकों ने जहां एक ओर इक्विटी फंड्स में लगातार पैसे डाले हैं, वहीं डेट फंड्स से बड़े पैमाने पर पैसे निकाले गए हैं। आंकड़ों के मुताबिक अगस्त 2025 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के लिए मिला-जुला महीना रहा। कुल नेट इनफ्लो 33,430 करोड़ रुपये रहा, जो जुलाई 2025 के 42,702 करोड़ रुपये की तुलना में करीब 22% कम है। हालांकि यह गिरावट दिखाती है कि निवेशक थोड़े सावधान हो गए हैं, लेकिन यह भी सच है कि यह लगातार 54वां महीना है जब इक्विटी फंड्स में नेट इनफ्लो देखने को मिला।

फ्लेक्सी, मिड और लार्ज कैप में इनफ्लो बढ़ा

अगस्त में सबसे ज्यादा निवेश फ्लेक्सी कैप फंड्स में आया। इस कैटेगरी में 7,679 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो दर्ज हुआ, जो जुलाई के 7,654.33 करोड़ रुपये के नेट-इनफ्लो के मुकाबले थोड़ा बेहतर रहा। मिड कैप फंड्स में भी 5,330 करोड़ रुपये का इनफ्लो रहा, जबकि जुलाई में यह 5,182 करोड़ रुपये था। दिलचस्प बात यह रही कि लार्ज कैप फंड्स में 2,835 करोड़ रुपये का नेट निवेश आया, जो जुलाई के 2,125 करोड़ रुपये से 33% ज्यादा रहा। हालांकि, स्मॉल कैप फंड्स में निवेश की रफ्तार थोड़ी धीमी पड़ी और इसमें नेट इनफ्लो जुलाई के 6,484 करोड़ रुपये से घटकर अगस्त में 4,993 करोड़ रुपये रह गया।

डेट फंड्स में निकासी का दबाव

अगस्त 2025 में डेट म्यूचुअल फंड्स ने बड़ा झटका खाया। कुल मिलाकर इस कैटेगरी से 7,980 करोड़ रुपये का नेट आउटफ्लो हुआ। यह तब है जब जुलाई 2025 में इन्हीं फंड्स में 1.07 लाख करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो दर्ज हुआ था। कई सब-कैटेगरी जैसे कॉरपोरेट बॉन्ड फंड्स, बैंकिंग एवं पीएसयू फंड्स और गिल्ट फंड्स से पैसे निकाले गए। इसका बड़ा कारण कॉर्पोरेट्स और संस्थागत निवेशकों की तरफ से मनी मार्केट और लिक्विड फंड्स से निकासी बताई जा रही है, जो आमतौर पर तिमाही खत्म होने के बाद होती है।

हाइब्रिड फंड्स का आकर्षण बरकरार

हाइब्रिड फंड्स में निवेशकों का भरोसा जारी रहा। अगस्त में इसमें 15,294 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो दर्ज हुआ। हालांकि यह जुलाई के 20,879 करोड़ रुपये से कम है, लेकिन फिर भी इससे संकेत मिलता है कि निवेशक बैलेंस्ड और डायनैमिक स्ट्रेटजी वाले फंड्स को पसंद कर रहे हैं।

गोल्ड ईटीएफ और इंडेक्स फंड्स रहे फेवरिट

गोल्ड ईटीएफ अगस्त में निवेशकों के बीच काफी पॉपुलर रहे. इनमें 2,190 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो आया, जो जुलाई के 1,256 करोड़ रुपये की तुलना में करीब 74% ज्यादा है. इससे यह भी पता चलता है कि सोने की कीमतों में लगातार मजबूती और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मौजूदा चुनौतियों के कारण निवेशक गोल्ड को सुरक्षित ऑप्शन मान रहे हैं। इंडेक्स फंड्स और अन्य ईटीएफ का आकर्षण भी बरकरार है। अगस्त में इंडेक्स फंड्स का एयूएम करीब 3.04 लाख करोड़ रुपये और नेट इनफ्लो 1,503 करोड़ रुपये रहा, जबकि अन्य ईटीएफ का एयूएम करीब 8.42 लाख करोड़ रुपये और नेट इनफ्लो 7,244 करोड़ रुपये रहा।

एनएफओ कलेक्शन में भारी गिरावट

जुलाई में म्यूचुअल फंड्स की 30 नई स्कीम्स या न्यू फंड ऑफर (एनएफओ) लॉन्च हुए थे और उनके जरिये 30,416 करोड़ रुपये जुटाए गए थे। लेकिन अगस्त में एनएफओ की संख्या घटकर 23 और जुटाई गई रकम सिर्फ 2,859 करोड़ रुपये रह गई।

फोलियो नए रिकॉर्ड पर, कुल एयूएम घटा

इंडस्ट्री का कुल एयूएम अगस्त में 75.19 लाख करोड़ रुपये रहा, जो जुलाई के 75.36 लाख करोड़ रुपये से मामूली रूप से कम है, लेकिन इस दौरान फोलियो की कुल संख्या बढ़कर 24.89 करोड़ हो गई। जुलाई में यह संख्या 24.57 करोड़ थी। यानी निवेशकों के लगभग 32 लाख नए खाते जुड़े, जो यह दिखाता है कि छोटे निवेशक लगातार इस इंडस्ट्री का हिस्सा बन रहे हैं। अगस्त 2025 का महीना इस लिहाज से अहम रहा कि इक्विटी फंड्स में पैसे आते रहे, लेकिन रफ्तार धीमी हुई। फ्लेक्सी कैप, मिड कैप और लार्ज कैप फंड्स में निवेशकों का भरोसा दिखा, जबकि स्मॉल कैप में सावधानी दिखी। दूसरी ओर, डेट फंड्स ने करारा झटका खाया. हाइब्रिड फंड्स और गोल्ड ईटीएफ निवेशकों को आकर्षित करते रहे।

निवेश का जैकपॉट : कुछ इक्विटी फंड्स ने 10 साल में दिया 533 से 678% तक रिटर्न

लंबी अवधि का मानक 10 साल मानें तो कई इक्विटी म्यूचुअल फंड सबसे बेहतर

सात फंड ऐसे हैं, जिनमें 20% सालाना से अधिक रिटर्न निवेशकों को मिला

इन फंड्स को खरीदने वाले निवेशक भी मालामाल, जमकर किया निवेश

बिजनेस डेस्क

अगर आप भी निवेशक हैं या निवेश करने जा रहे हैं तो एक बार बाजार के बारे में रिसर्च जरूर कर लें। इससे आपको निवेश में आसानी रहेगी और पैसे का नुकसान नहीं होगा। बाजार में पैसा लगाने से पहले अपनी रिस्क क्षमता और लक्ष्य को जान लें। इसके बाद निवेश करेंगे जो मुनाफे में ही रहेंगे। म्यूचुअल फंड में निवेश करने जा रहे हैं तो हमेशा लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर चलें। म्यूचुअल फंड लंबी अवधि के निवेश के लिए सबसे अच्छे विकल्पों में एक माने जाते हैं। निवेश की अवधि जितना अधिक होगी, कंपाउंडिंग का उतना ज्यादा फायदा मिलेगा। लंबी अवधि का मानक 10 साल मानें तो कई इक्विटी म्यूचुअल फंड स्कीम निवेशकों के लिए जैकपॉट साबित हुई हैं। इनमें से 7 फंड तो ऐसे हैं, जिनमें 20 फीसदी सालाना से अधिक रिटर्न मिला है। इनका 10 साल में एबसॉल्यूट रिटर्न 533 से 678 फीसदी रहा है। इसका मतलब है कि इन्होंने इस अवधि में निवेशकों का पैसा 6 से 7.5 गुना बढ़ा दिया। हमने इस रिपोर्ट में ईटीएफ को शामिल नहीं किया है।

म्यूचुअल फंड में निवेश करने जा रहे हैं तो हमेशा लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर चलें
•
बाजार में पैसा लगाने से पहले अपनी रिस्क क्षमता और लक्ष्य को पहचान लें

निप्पॉन इंडिया स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 22.78% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 7,78,532 रुपये (7.79 लाख)
- रेटिंग : 5 स्टार
- कुल एसेट्स : 64,821 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.64% (31 अगस्त, 2025)

क्वांट ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड

- 5 साल का रिटर्न : 21.86% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 7,22,124 रुपये (7.22 लाख)
- रेटिंग : 3 स्टार
- कुल एसेट्स : 11,396 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.58% (31 अगस्त, 2025)

एचडीएफसी स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.47% सालाना
- लाख निवेश की वैल्यू : 6,43,857 रुपये (6.44 लाख)
- रेटिंग : 4 स्टार
- कुल एसेट्स : 36,294 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.69% (31 अगस्त, 2025)

एक्सिस स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.46% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,43,622 रुपये (6.43 लाख)
- रेटिंग : 3 स्टार
- कुल एसेट्स : 25,569 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.57% (31 अगस्त, 2025)

इन्वेस्को इंडिया मिड कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.39% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,39,594 रुपये (6.40 लाख)
- रेटिंग : 4 स्टार
- कुल एसेट्स : 8,063 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.56% (31 अगस्त, 2025)

एसबीआई स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.30% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,34,828 रुपये (6.35 लाख)
- रेटिंग : 3 स्टार
- कुल एसेट्स : 35562.96 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.73% (31 अगस्त, 2025)

क्वांट स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.25% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,32,195 रुपये (6.32 लाख)
- रेटिंग : 4 स्टार
- कुल एसेट्स : 28,758 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.72% (31 अगस्त, 2025)

क्या हैं इक्विटी फंड

इक्विटी फंड एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है जो मुख्य रूप से शेयर बाजार में निवेश करता है। इसका उद्देश्य निवेशकों को शेयर बाजार में निवेश करने का अवसर प्रदान करना है, जिससे वे अपने निवेश पर अच्छा रिटर्न प्राप्त कर सकें।

इक्विटी फंड के प्रकार

1. **लार्ज-कैप फंड:** ये फंड बड़े कैप शेयरों में निवेश करते हैं, जो आमतौर पर अच्छी तरह से स्थापित कंपनियों के शेयर होते हैं।
2. **मिड-कैप फंड:** ये फंड मध्यम आकार की कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं, जो आमतौर पर तेजी से बढ़ने वाली कंपनियां होती हैं।
3. **स्मॉल-कैप फंड:** ये फंड छोटी कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं, जो आमतौर पर उच्च जोखिम और उच्च रिटर्न की संभावना के साथ आते हैं।
4. **सेक्टोरल फंड:** ये फंड विशिष्ट क्षेत्रों या उद्योगों में निवेश करते हैं, जैसे कि टेक्नोलॉजी, फार्मास्यूटिकल्स, या ऑटोमोबाइल।

इक्विटी फंड के लाभ

1. **विविधीकरण:** इक्विटी फंड निवेशकों को विविधीकरण का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे वे अपने निवेश को विभिन्न शेयरों में फैला सकते हैं।
2. **पेशेवर प्रबंधन:** इक्विटी फंड पेशेवर फंड प्रबंधकों द्वारा प्रबंधित किए जाते हैं, जो निवेशकों के लिए निवेश के निर्णय लेते हैं।
3. **लिक्विडिटी:** इक्विटी फंड निवेशकों को अपने निवेश को आसानी से बेचने और नकदी प्राप्त करने का अवसर प्रदान करते हैं।

इक्विटी फंड के जोखिम

1. **बाजार जोखिम:** इक्विटी फंड शेयर बाजार में निवेश करते हैं, जो बाजार की अस्थिरता के कारण जोखिम भरा हो सकता है।
2. **कंपनी-विशिष्ट जोखिम:** इक्विटी फंड विशिष्ट कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं, जो कंपनी-विशिष्ट जोखिमों के अधीन हो सकते हैं।
3. **इक्विटी फंड:** निवेशकों के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है जो शेयर बाजार में निवेश करने के इच्छुक हैं और जोखिम उठाने की क्षमता रखते हैं

करोड़पति बनाने वाली स्कीमों में लोग कर रहे जमकर निवेश, आठ गुणा तक बढ़ा पैसा

सिर्फ 9 साल में छू लिया आसमानी आंकड़ा, 28,265 करोड़ कर डाले निवेश, एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश लगातार बढ़ रहा

अपने पैसे को लोग अलग-अलग स्कीम में निवेश करते हैं। किसी स्कीम में रिटर्न कम मिलता है तो किसी में ज्यादा। वहीं जो लोग जोखिम लेते हैं, वे एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करते हैं। यह एक ऐसी स्कीम है जिसमें लगातार छोटी रकम के निवेश से ही व्यक्ति करोड़पति बन सकता है। एक नई रिपोर्ट के अनुसार, एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में हर महीने जमा होने वाला पैसा पिछले नौ सालों में लगभग आठ गुना बढ़ गया है। व्हाइटओक कैपिटल म्यूचुअल फंड की एक रिपोर्ट बताती है कि अगस्त 2016 में एसआईपी के जरिए कुल 3,497 करोड़ रुपये आए थे। अगस्त 2025 तक ये आंकड़ा बढ़कर 28,265 करोड़ रुपये हो गया है। इससे पता चलता है कि निवेशकों का एसआईपी पर भरोसा बढ़ रहा है। वे इसे पैसे बनाने का एक अच्छा तरीका मान रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह लगातार वृद्धि दिखाती है कि एसआईपी में निवेशकों का विश्वास बढ़ रहा है।

कितना रहा रिटर्न : अगस्त 1996 से अगस्त 2025 के बीच एसआईपी से मिलने वाला सबसे ज्यादा रिटर्न 55.6 प्रतिशत रहा। वहीं, सबसे कम रिटर्न -24.6 प्रतिशत रहा। लेकिन अगर औसत रिटर्न की बात करें, तो यह 14-16 प्रतिशत के आसपास रहा। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने कितने समय के लिए निवेश किया है।

निवेश का कौन सा समय सही : रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि मार्केट में कब निवेश करना है, यह इतना जरूरी नहीं है जितना कि निवेश करते रहना। अगर आपने मार्केट के टॉप पर भी एसआईपी शुरू की थी, तो भी आपको लंबे समय में अच्छा फायदा हुआ होगा। उदाहरण के लिए, अगर किसी ने जनवरी 2008 में 10,000 रुपये की मंथली एसआईपी शुरू की थी, जो कि ग्लोबल फाइनेंशियल क्राइसिस से ठीक पहले का समय था, तो भी अगस्त 2025 तक उसका 21.2 लाख रुपये का निवेश बढ़कर 75.23 लाख रुपये हो गया होता। इस पर उसे लगभग 13 प्रतिशत का एक्सआईआरआर मिला होता। एक्सआईआरआर एक तरीका है जिससे पता चलता है कि आपके निवेश पर आपको कितना रिटर्न मिला है।

किस कैटेगरी का कितना रिटर्न : दिलचस्प बात यह है कि रिपोर्ट में यह भी पाया गया है कि मिड-कैप एसआईपी ने लॉन्ग टर्म में लार्ज-कैप और स्मॉल-कैप कैटेगरी से बेहतर रिटर्न दिया है। मिड-कैप एसआईपी का एवरेज रिटर्न 17.4 प्रतिशत रहा, जबकि लार्ज-कैप का 13 प्रतिशत और स्मॉल-कैप का 14.7 प्रतिशत रहा।

पांच लाख की रकम को कैसे करें निवेश कि मिले बढ़िया मुनाफा

अक्सर ज्यादा रिटर्न देने वाले विकल्पों की तलाश में रहते हैं निवेशक

प्लानिंग
बिजनेस डेस्क

अगर आपके पास 5 लाख रुपये हैं और आप इन्हें निवेश करना चाहते हैं तो यह रिपोर्ट आपके लिए बेहतर हो सकती है। देखने में आया है कि भारतीय निवेशक हमेशा सुरक्षित और ज़्यादा रिटर्न देने वाले निवेश विकल्पों की तलाश में रहते हैं। अगर आप भी अपनी एकमुश्त रकम को निवेश करना चाहते हैं और इसके लिए बेहतर ऑप्शन की तलाश में हैं एक बार जरूर देखें की आपके लिए पोस्ट ऑफिस की सकीम बेहतर रहेगी, बैंक की एफडी या फिर डेट फंड इनमें से कहा आपको ज्यादा मुनाफा मिल सकता है। निवेश का चुनाव हमेशा व्यक्ति की फाइनेंशियल कंडीशन, गोल्स और रिस्क सहने की क्षमता पर निर्भर करता है। ऐसे में जब 5 लाख या 10 लाख रुपये के एकमुश्त निवेश की बात आती है तो लोगों के लिए सही विकल्प चुनना और जरूरी हो जाता है क्योंकि इतनी बड़ी रकम को ऐसे ही कहीं भी निवेश नहीं किया जा सकता। ऐसे में बैंक की तरह पोस्ट ऑफिस एफडी भी वर्षों से सुरक्षित और विश्वसनीय निवेश ऑप्शन रही है। वहीं, हाल के वर्षों में डेट फंड भी एक लोकप्रिय ऑप्शन के तौर पर उभर रहा है। लोग इसे एफडी से बेहतर रिटर्न देने वाला ऑप्शन मानते हैं। आइए समझते हैं कि अगर 5 लाख रुपये का निवेश कहां ज्यादा मुनाफा दे सकता है।

एकमुश्त निवेश के लिए सही विकल्प चुनना बेहद जरूरी
पोस्ट ऑफिस एफडी भी वर्षों से सुरक्षित और विश्वसनीय निवेश ऑप्शन रही
अब हाल के वर्षों में डेट फंड भी लोकप्रिय ऑप्शन के तौर पर उभरा

पोस्ट ऑफिस फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) की खासियत

- सुरक्षा: ये सबसे सुरक्षित निवेश विकल्पों में से एक है क्योंकि ये सरकार द्वारा समर्थित है.
- निश्चित रिटर्न: आपको निवेश की शुरुआत में ही ब्याज दर पता चल जाती है, जिससे रिटर्न का अनुमान लगाना आसान हो जाता है।
- लॉक-इन अवधि: तमाम टेन्योर के लिए उपलब्ध है, जैसे 1, 2, 3 और 5 साल।
- रेगुलर ब्याज भुगतान: आप मासिक, त्रैमासिक या वार्षिक आधार पर ब्याज प्राप्त करना चुन सकते हैं।

5 लाख के निवेश पर कितना होगा मुनाफा

- मान लीजिए कि आप पोस्ट ऑफिस की 5 साल की एफडी में निवेश कर रहे हैं। इस एफडी पर मौजूदा समय में 7.5% ब्याज मिल रहा है। अगर आप 5 लाख रुपये 5 साल के लिए निवेश करते हैं तो आपको 5 साल में 2,24,974 ब्याज मिलेगा और कुल मिलाकर 7,24,974 रुपये मिलेंगे।

डेट फंड की खासियत

- डेट फंड म्यूचुअल फंड की ही एक कैटेगरी है। इसमें खासतौर पर फिक्स्ड-इनकम सिक्योरिटीज जैसे सरकारी बॉन्ड, कॉर्पोरेट बॉन्ड, डिबेंचर, कमर्शियल पेपर और ट्रेजरी बिल में निवेश किया जाता है। इसका रिटर्न मार्केट बेस्ड होता है।
- **डायवर्सिफिकेशन:** डेट फंड तमाम तरह के हैं जैसे- लिक्विड फंड, अल्ट्रा-शॉर्ट ड्यूरेशन फंड, शॉर्ट ड्यूरेशन फंड, मीडियम ड्यूरेशन फंड और लॉन्ग ड्यूरेशन फंड, ऐसे में आपको डायवर्सिफिकेशन का मौका मिल जाता है।
- **लिक्विडिटी:** ये एफडी की तुलना में ज़्यादा लिक्विड होते हैं, क्योंकि आप अपनी यूनिट्स को किसी भी वर्किंग डे पर बेच सकते हैं (कुछ फंडों में एग्जिट लोड हो सकता है)।
- **प्रोफेशनल मैनेजमेंट :** फंड मैनेजर आपके पैसे का प्रबंधन करते हैं, जो बाज़ार की स्थितियों के आधार पर निवेश का फैसला लेते हैं।

5 लाख के निवेश पर रिटर्न

- डेट फंड का रिटर्न प्रदर्शन पर आधारित होता है और फ्यूचर में बदल सकता है। औसतन, कई डेट फंडों ने पिछले कुछ साल में 6-9% का रिटर्न दिया है। मान लीजिए आप 5 लाख रुपये 5 साल के लिए इसमें निवेश करते हैं और उस पर 9% का रिटर्न मिल रहा है तो 2,69,311 रुपये ब्याज के तौर पर मिलेंगे। इस तरह आपको कुल 5,00,000+2,69,312 = 7,69,312 रुपये मिलेंगे। हालांकि ये उदाहरण केवल अनुमानित है, वास्तविक रिटर्न फंड के प्रदर्शन पर निर्भर करेगा।

कौन सा विकल्प चुनें?

ये चुनाव आपकी व्यक्तिगत ज़रूरतों पर निर्भर करता है-जैसे जोखिम उठाने की क्षमता, अगर आप बिलकुल भी जोखिम नहीं लेना चाहते और अपनी पूंजी की 100% सुरक्षा चाहते हैं, तो पोस्ट ऑफिस एफडी आपके लिए बेहतर है। अगर आप थोड़ा जोखिम ले सकते हैं और एफडी से ज़्यादा रिटर्न चाहते हैं, तो डेट फंड एक अच्छा विकल्प है।

निवेश की अवधि

छोटी अवधि (3 साल से कम) के लिए, पोस्ट ऑफिस एफडी या शॉर्ट-ड्यूरेशन डेट फंड को देखा जा सकता है. लंबी अवधि (3 साल से ज़्यादा) के लिए, इंडेक्सेशन लाभ के कारण डेट फंड टैक्स के लिहाज से ज़्यादा कुशल और बेहतर रिटर्न दे सकता है।

कोई भी लोन लेने से पहले फायदे और नुकसान को जान लें

फिक्स्ड, फ्लोटिंग या फिर हाइब्रिड होम लोन के लिए कौन-सी ब्याज दर बेहतर, फिक्स्ड रेट वाले लोन तब बेहतर होते जब ब्याज दरें बढ़ रही हों

तैयारी
बिजनेस डेस्क

जब लोन पर घर खरीदने जार रहे हों तो एक बार बैंकों की ब्याज दरों को जांच लें। किसी जानकारी से सलाह ले लें। इससे आपको परेशानी नहीं होगी और आसानी से घर खरीद सकेंगे। अक्सर जब लोग घर खरीदने के लिए होम लोन लेते हैं, तो सबसे बड़ा सवाल यही होता है कि किस तरह का इंटरेस्ट रेट चुना जाए। फिक्स्ड, फ्लोटिंग और हाइब्रिड तीनों विकल्पों के अपने फायदे और नुकसान हैं। सही चुनाव करने से आपकी ईएमआई और लंबे समय की फाइनेंशियल प्लानिंग पर बड़ा असर पड़ता है। इसलिए इस सवाल का जवाब लोन लेने से पहले ही जान लेंगे तो आसानी रहेगी।

फिक्स्ड इंटरेस्ट रेट लोन

- फिक्स्ड रेट में आपकी ईएमआई पूरी लोन अवधि या शुरुआती कुछ साल तक एक जैसी रहती है। इसका फायदा यह है कि ब्याज दरें बढ़ने पर भी आपकी ईएमआई नहीं बदलती। इससे आपको हर महीने का खर्च आसानी से मैनेज करने में मदद मिलती है। हालांकि, इसका नुकसान यह है कि अगर ब्याज दरें घट जाएं तो इसका फायदा आपको नहीं मिलेगा। साथ ही, शुरुआती दरें भी अक्सर फ्लोटिंग से ज्यादा होती हैं। यह विकल्प उन लोगों के लिए बेहतर है, जिन्हें स्थिरता चाहिए और ईएमआई में उतार-चढ़ाव नहीं चाहते।

फ्लोटिंग इंटरेस्ट रेट लोन

- फ्लोटिंग रेट आरबीआई की नीतियों और मार्केट की परिस्थितियों के हिसाब से बदलता है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि ब्याज दर घटने पर ईएमआई कम हो जाती है। इससे लंबे समय में यह फिक्स्ड से सस्ता साबित हो सकता है। होम लोन लेने वाले ज्यादातर लोग यही विकल्प चुनते हैं। मार्केट की स्थिति अर्थव्यवस्था में महंगाई और ब्याज दरों की दिशा होम लोन पर सीधा असर डालती है। जब महंगाई बढ़ती है तो बैंक ब्याज दरें ऊपर कर देते हैं ताकि जोखिम कम हो। वहीं स्थिर बाजार में ब्याज दरें अक्सर सस्ती हो जाती हैं। इसलिए टाइमिंग भी अहम फैक्टर है। लेकिन, फ्लोटिंग रेट की अपनी खामियां हैं। अगर ब्याज दर बढ़ जाएं तो **EMI** भी बढ़ जाती है। यह आपका पूरा बजट भी बिगाड़ सकती है। यह विकल्प उन लोगों के लिए ज्यादा सही रहता है, जो लंबे समय तक लोन लेने वाले हैं और ईएमआई में उतार-चढ़ाव सह सकते हैं।

हाइब्रिड इंटरेस्ट रेट लोन

- हाइब्रिड लोन में शुरुआती कुछ सालों तक ईएमआई फिक्स्ड रहती है और उसके बाद यह फ्लोटिंग में बदल जाती है। इस तरह पहले कुछ सालों तक स्थिरता मिलती है और बाद में मार्केट के हिसाब से ब्याज दरें घटने पर फायदा हो सकता है। हालांकि शुरुआती दरें फ्लोटिंग से थोड़ी ज्यादा हो सकती हैं और अगर बाद में ब्याज दरें बढ़ जाएं तो ईएमआई भी बढ़ेगी। यह विकल्प उन लोगों के लिए सही है जो शुरुआत में ईएमआई स्थिर रखना चाहते हैं और आगे चलकर रिस्क लेने को तैयार हैं।

क्या है एक्सपर्ट की राय?

जानकारों का कहना है कि फिक्स्ड रेट वाले लोन तब बेहतर होते हैं जब ब्याज दरें बढ़ रही हों। ये उन लोगों के लिए ठीक हैं जिन्हें स्थिरता चाहिए या लगता है कि दरें आगे और बढ़ेंगी। वहीं, फ्लोटिंग रेट घटती ब्याज दर वाले माहौल में सही रहते हैं। हाइब्रिड होम लोन उन लोगों के लिए होते हैं जो शुरू में कुछ साल तक निश्चित ईएमआई चाहते हैं, लेकिन आगे चलकर बाजार के हिसाब से ब्याज दरों का फायदा उठाना चाहते हैं।लोन की अवधि का असर लोन का टेन्योर जितना लंबा होगा, कुल ब्याज का बोझ उतना ज्यादा होगा। छोटी अवधि का लोन लेने पर ईएमआई थोड़ी बड़ी होगी लेकिन ब्याज की बचत काफी होगी। इसलिए अपनी क्षमता के हिसाब से संतुलित अवधि चुनना बेहतर रहता है।

लोन लेने की लागत स्थिर

अभी की स्थिति देखें तो लोन लेने की लागत स्थिर हो रही है। आरबीआई की ओर से रेपो रेट में हालिया कटौतियों से ग्राहकों का भरोसा भी बढ़ा है। इस समय फ्लोटिंग रेट होम लोन की ब्याज दर अपेक्षाकृत कम हैं। इसलिए यह उन लोगों के लिए अच्छा विकल्प है जो कुल ब्याज खर्च घटाना चाहते हैं।'होमबायर्स को आखिरी फैसला लेने से पहले कुछ बातों पर जरूर विचार करना चाहिए। जैसे कि अभी अलग-अलग लोन ऑप्शन पर ब्याज दर में कितना फर्क है और लोन अवधि कितनी लंबी है। अगर लोन लंबे समय के लिए है तो फ्लोटिंग रेट से फायदा हो सकता है, क्योंकि आगे चलकर अगर दरें घटती हैं तो कुल ब्याज का बोझ कम होगा।

ऐसे कर सकते हैं प्लानिंग

- 1. **वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन :** अपनी वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन करें और देखें कि आप कितना होम लोन ले सकते हैं। अपनी आय, व्यय, और बचत को ध्यान में रखें।
- 2. **होम लोन की आवश्यकता :** अपने होम लोन की आवश्यकता को निर्धारित करें। आपको कितनी राशि की आवश्यकता है? आप कितने समय में लोन चुकाना चाहते हैं?
- 3. **ब्याज दरें और शर्तें :** विभिन्न बैंकों और वित्तीय संस्थानों की ब्याज दरें और शर्तें तुलना करें। सबसे अच्छा विकल्प चुनें जो आपकी आवश्यकताओं को पूरा करता है।
- 4. **लोन की अवधि :** लोन की अवधि का चयन करें जो आपकी वित्तीय स्थिति के अनुसार उपयुक्त हो। लंबी अवधि के लोन में मासिक किस्त कम होती है, लेकिन कुल ब्याज अधिक होता है।
- 5. **प्रोसेसिंग फीस और अन्य शुल्क :** प्रोसेसिंग फीस और अन्य शुल्कों को ध्यान में रखें। ये शुल्क आपके लोन की कुल लागत को बढ़ा सकते हैं।
- 6. **क्रेडिट स्कोर :** अपने क्रेडिट स्कोर को जांचें और सुनिश्चित करें कि यह अच्छा है। एक अच्छा क्रेडिट स्कोर आपको बेहतर ब्याज दरों और शर्तों के लिए योग्य बना सकता है।
- 7. **विकल्पों की तुलना :** विभिन्न होम लोन विकल्पों की तुलना करें और सबसे अच्छा विकल्प चुनें जो आपकी आवश्यकताओं को पूरा करता है।
- 8. **वित्तीय सलाहकार से परामर्श :** यदि आवश्यक हो, तो वित्तीय सलाहकार से परामर्श लें। वे आपको होम लोन के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान कर सकते हैं और आपको सबसे अच्छा विकल्प चुनने में मदद कर सकते हैं।

खबर संक्षेप

कैंप में 200 लोगों का स्वास्थ्य जांचा

बहादुरगढ़। लाइनपार वार्ड -2 में शिव मंदिर पर स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया गया। पंडित नीरज मुदगिल व ओमबीर छिकारा द्वारा लगाए कैंप में डॉ उमेश शर्मा, प्रमोद, अनीता, पूनम आदि ने करीब 200 लोगों का स्वास्थ्य जांचा। पार्षद सत्यप्रकाश छिकारा ने कहा कि स्वस्थ रहना हर व्यक्ति के लिए जरूरी है। इस अवसर पर अनिल सिंगल, सिकंदर प्रधान, एडवोकेट विक्रम छिल्लर, रौनक, संजीव शर्मा, एएसआई सरला देवी, शिवम भारद्वाज, एडवोकेट गौरव , बबीता दहिया आदि मौजूद रहे।

एसीपी ने बस चालकों को दी सख्त हिदायतें

बहादुरगढ़। शहर में यातायात व्यवस्था को दुरुस्त करने और आमजन को राहत देने के उद्देश्य से एसीपी दिनेश कुमार ने रोडवेज व प्राइवेट बस चालकों के साथ बैठक की। उन्होंने कहा कि शहरवासियों से लगातार प्रेशर हॉर्न और बसों की मनमानी स्टॉपिंग को लेकर शिकायतें मिल रही हैं। तेज आवाज वाले हॉर्न बच्चों, बुजुर्गों और बीमार लोगों के लिए खतरनाक साबित हो रहे हैं, वहीं कहीं भी बस रोकने से ट्रैफिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त होती है। एसीपी ने कहा कि बस चालकों की मनमानी से यातायात व्यवस्था भी बिगड़ रही है। सवारियां बैठाने के लिए कहीं भी बस रोक देने से अन्य वाहनों को परेशानी होती है। उन्होंने कहा कि आगे से बसें केवल निर्धारित स्थानों पर ही रोकी जाएं। उन्होंने सख्त हिदायत दी कि यदि भविष्य में कोई चालक नियमों की अवहेलना करता पाया गया तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। इस बैठक में रोडवेज जीएम भी मौजूद रहे।

महर्षि दयानंद सरस्वती खेल स्टेडियम में अव्यवस्थाओं का आलम

सफाई नहीं होने के कारण खिलाड़ी हैं मायूस, नहीं कर पा रहे अभ्यास

झज्जर। स्टेडियम में बदहाल हुआ मैदान और टूटी हुई बैंच और उगी हुई ऊंची-ऊंची घास।

स्टेडियम में उगी हुई ऊंची-ऊंची घास उसके सौंदर्य को लगा रही हैं ग्रहण

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

महर्षि दयानंद सरस्वती खेल स्टेडियम में चरमराई सफाई व्यवस्था के कारण खिलाड़ियों को नियमित अभ्यास करने में कठिनाई आ रही है। पिछले दिनों खेल मैदान में हुए जलभराव के बाद अधिकांश खिलाड़ियों ने नियमित अभ्यास करना बंद कर दिया था। अब कई दिनों से साफ हुए मौसम चलते स्टेडियम में पानी सूख गया है लेकिन सफाई न होने के कारण खिलाड़ी अब भी मायूस हैं।

जिला खेल अधिकारी कार्यालय भी इसी परिसर में है। ऐसे में खिलाड़ियों व अभिभावकों का कहना है कि जब डीएसओ कार्यालय वाले खेल परिसर में ऐसा बुरा हाल है तो विभिन्न गांवों में बनाए खेल स्टेडियम का हाल क्या होगा, इस बात अंजादा सहज लगाया जा सकता है। स्टेडियम में उगी हुई ऊंची-ऊंची घास उसके सौंदर्य को ग्रहण लगा रही है। हॉकी का अभ्यास करने वाले खिलाड़ियों ने तो अब अभ्यास ही बंद कर दिया है। उनके खेल मैदान में जब पिछले दिनों पानी भर गया था तो उन्होंने अभ्यास करना बंद कर दिया। अब पानी सूखने के बाद भी उनके मैदान में कोई साफ-सफाई नहीं है। यहां प्रतिदिन सैंकड़ों खिलाड़ी विभिन्न खेलों का अभ्यास करने के लिए आते हैं। लेकिन सुविधाओं की कमी के कारण प्रतिभाएं दम तोड़ रही है। प्रशासन को चाहिए कि वह इस दिशा में ठोस कदम उठाएं।

झज्जर। डीएसओ कार्यालय के पीछे स्टेडियम परिसर में बिखरा पड़ा कूड़ा। फोटो : हरिभूमि

टूट रहा का मनोबल

अभिभावक धर्मेंद्र ने बताया कि उसका पुत्र बॉक्सिंग का खिलाड़ी है। वे रोजाना यहां उसे अभ्यास कराने लिए आते हैं, लेकिन मैदान की हालत देख खिलाड़ियों का मनोबल टूटने लगा है। हालांकि उनकी विंग में जलभराव नहीं है लेकिन वार्मअप के लिए वे खेल मैदान के चक्कर लगाते थे, जो जलभराव के कारण बंद कर दिया गया था। खेल प्रेमियों का कहना है कि स्टेडियम की अनदेखी से जिले की खेल प्रतिभाओं पर बुरा असर पड़ेगा। यहां के बैंच भी जहां टूटे हुए हैं वहीं जगह-जगह पर कूड़े के ढेर भी लगे हैं।

झज्जर। खुड्डन के शिव मंदिर के पुजारी को बाल विवाह निषेध संबंधी जागरुकता सामग्री देते हुए संस्था सदस्या। फोटो : हरिभूमि

बाल विवाह रोकने को लेकर धर्मगुरुओं से मांगा सहयोग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

■ श्रद्धालुओं को बाल विवाह के उन्मूलन के लिए प्रेरित करें

जस्ट राइट्स फार चिल्ड्रन एलायंस की सहयोगी संस्था एमडीडी ऑफ इंडिया द्वारा बाल विवाह के खिलाफ वैश्विक अंतर धार्मिक विशेष अभियान चलाया जा रहा है।

संस्था की टीम द्वारा जिले के सभी धार्मिक स्थानों पर पहुंच कर धर्मगुरुओं से भी आग्रह किया जा रहा है कि वे श्रद्धालुओं को बाल विवाह के उन्मूलन के लिए प्रेरित करें। संस्था सदस्य मनोज ने बताया कि शनिवार को उनके द्वारा स्थानीय अंबेडकर चौक स्थित खाटू श्याम मंदिर, बेरी के मां भीमेश्वरी मंदिर, दुजाना की सफेद मस्जिद, लाल मस्जिद तथा खुड्डन के शिव मंदिर और ठाकुर मंदिर तथा छप्पार गांव मंदिर का दौरा करते हुए वहां के संचालकों से बाल विवाह रोकने का अनुरोध किया।

प्रथम चरण की प्रतियोगिता में भाग लेने की अंतिम तिथि 15 अक्टूबर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय की इकाई माई भारत के अंतर्गत विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग 2026 का आयोजन किया जा रहा है। प्रथम चरण की प्रतियोगिता में भाग लेने की अंतिम तिथि आगामी 15 अक्टूबर है। शीर्ष दस हजार विजेताओं को मुफ्त माई भारत उपहार मिलेंगे।

जिला युवा अधिकारी ब्रिजेश कौशिक ने बताया कि इस संवाद का लक्ष्य युवाओं को विकसित भारत 2047 के विजन से जोड़ना है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवाओं को नेतृत्व, विचार-विमर्श और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में शामिल करना है।

उन्होंने कहा कि यह संवाद युवाओं को अपने विचार साझा करने, नेतृत्व प्रदर्शित करने और सामूहिक दृष्टिकोण से राष्ट्र निर्माण में योगदान देने का अवसर प्रदान करेगा। उन्होंने बताया कि इस संवाद की शुरुआत 'माई भारत क्विज' से होगी, जो 12 भाषाओं में आयोजित की जाएगी। क्विज में कुल 20 प्रश्न होंगे और सभी प्रश्नों का उत्तर देने के लिए दस मिनट का समय मिलेगा।

राम का नाम अविनाशी, जिसकी महिमा अपरम्पार: स्वामी उमानंद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

बाबा कांशीगिरी मंदिर में श्राद्ध पक्ष में पुरखों के निमित श्री रामकथा का आयोजन शनिवार से आरंभ हुआ। मंदिर की महिला मंडली के संयोजन में आयोजित कथा से पूर्व सैकड़ों महिलाओं ने पीत वस्त्र धारण कर सिर पर कलश रख कर नगर परिक्रमा की। कथा के पहले दिन कथा व्यास स्वामी उमानंद ने कहा कि राम नाम तो अविनाशी है। दुनिया इधर उधर हो जाए, सब कुछ बदल जाए पर यह राम नाम ज्यों का त्यों यूं ही सदा बना रहेगा। इस राम नाम की महिमा कभी भी कम नहीं होगी बल्कि दिन-प्रतिदिन इसकी महिमा बढ़ते ही जाएगी। उन्होंने कहा कि राम की महिमा अपरम्पार है। राम खुद कह गए राम से बड़ा राम का नाम। राम नाम की महिमा तो ये है की सदा शिव भोले शंकर भी राम नाम जपते रहते हैं। शनिवार को शुरू हुई कथा आगामी रविवार तक चलेगी। समापन अवसर पर बृज रसिका मीनाक्षी दीदी द्वारा भजन संध्या की जाएगी। इस दौरान रवींद्र वर्मा, सुभाष वर्मा, दिनेश दुजाना, लक्ष्य वर्मा, इंदु भुगड़ा सहित काफी संख्या में महिलाएं उपस्थित रही।

एचडी स्कूल में कैपसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम

कार्यशाला में शिक्षकों ने सीखे समावेशी शिक्षा के गुर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

एचडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय साल्हावास में शनिवार को कैपसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम की दो दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। कार्यशाला में शिक्षा क्षेत्र में 30 वर्ष का अनुभव रखने वाली जिला प्रशिक्षक समन्वयक डॉक्टर किरण दलाल और 10 वर्ष का अनुभव रखने वाली साइक्लोजिस्ट काउंसलर निकिता यादव ने सरल और सहज भाषा में समावेशी शिक्षा पर गहन जानकारी दी।

विद्यालय प्राचार्य सतबीर सिंह की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यशाला में मंच संचालन रिसोर्स पर्सन नीलम कुमारी द्वारा किया गया। कार्यशाला में साठ शिक्षकों ने समावेशी शिक्षा के गुरु सीखे। एचडी ग्रुप के डायरेक्टर रमेश गुलिया ने बताया कि नई शिक्षा नीति के अंतर्गत बच्चों को ऐसी शिक्षा प्रणाली उपलब्ध हो, जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो सके। इसके लिए सीबीएसई ने ऑनलाइन और ऑफलाइन प्रशिक्षण कार्यशालाओं का संचालन किया है, जो बोर्ड की अति सराहनीय व सार्थक पहल है।

फाइन आर्ट क्लब ने करवाया आयोजन

मूर्तिकला और क्ले मॉडलिंग कार्यशाला संपन्न

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय में महिला प्रकोष्ठ और फाइन आर्ट क्लब के संयुक्त तत्ववाधान में आयोजित दो दिवसीय मूर्तिकला, मिट्टी बर्तन निर्माण शिल्प और क्ले मॉडलिंग कार्यशाला शनिवार को संपन्न हुई। कार्यशाला में विद्यार्थियों को पारंपरिक कला और शिल्प के विभिन्न रूपों की गहरी समझ और अनुभव प्राप्त हुआ।

प्रशिक्षक पुष्कर ने विद्यार्थियों को इन कलाओं के महत्व के बारे में बताया। डॉक्टर प्रियंका ने बताया कि कार्यशाला के दौरान तैयार किए गए सभी मॉडल्स को 18 को आयोजित होने वाले जिला स्तरीय कार्यक्रम में प्रदर्शित किया जाएगा। प्राचार्य डॉक्टर दलबीर सिंह ने बताया कि इस तरह की गतिविधियां विद्यार्थियों को न केवल रचनात्मकता के क्षेत्र में बल्कि व्यापार और विपणन का कौशल भी प्रदान करती हैं।

महिलाओं को सुरक्षा के प्रति जागरूक किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

■ गलत हरकत होते ही तुरंत हेल्पलाइन नंबर पर सूचित करें

औद्योगिक क्षेत्र में स्थित रिलेक्सो फुटवीयर प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में एमआईई चौकी प्रभारी उपनिरीक्षक मोनिका ने कर्मचारियों को जागरूक किया। उन्होंने नशे से दूर रहने, यातायात नियमों का पालन करने, साइबर सुरक्षा और महिला सुरक्षा संबंधी मुद्दों पर जानकारी दी।

प्रभारी मोनिका ने कहा कि झज्जर पुलिस महिलाओं की सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर है। किसी भी महिला को डरने की आवश्यकता नहीं है, यदि कोई गलत हरकत होती है तो तुरंत पुलिस हेल्पलाइन नंबर पर सूचित करें। उन्होंने महिलाओं को डायल 112, ट्रिप मॉनिटरिंग सेवा और दुर्गा शक्ति एप के सही उपयोग के बारे में बताया ताकि मुसीबत के समय तुरंत मदद मिल सके। उन्होंने कहा कि कामकाजी महिलाओं को इन सेवाओं का विशेष रूप से लाभ उठाना चाहिए और किसी भी परेशानी का सामना आत्मविश्वास व धैर्य से करना चाहिए। इस अवसर पर विशेष प्रशिक्षित महिला कर्मचारी मुख्य सिपाही टीना और उनकी टीम ने महिलाओं को आत्मरक्षा के तरीके सिखाए।

झज्जर। स्वच्छता अभियान के तहत गांवों में स्वच्छता से जुड़ी गतिविधि चलाते सफाई कर्मी। फोटो : हरिभूमि

झज्जर और बहादुरगढ़ की सभी रेवेनुए व न्यायिक अदालतों ने भाग लिया

राष्ट्रीय लोक अदालत ने 13,411 मामलों का किया निपटारा

■ ट्रैफिक चालान के मामले चालान ब्रांच ने लंबित 8026 मामलों का निपटारा किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

शनिवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा जिला एवं सत्र न्यायधीश अजय तेवतिया के मार्गदर्शन में झज्जर व बहादुरगढ़ में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव एवं सीजेएम विशाल ने बताया कि राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन फिजिकल तरीकें से किया गया। इस लोक अदालत में झज्जर व बहादुरगढ़ की सभी रेवेनुए व न्यायिक अदालतों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त पीएलए (पीयूएस) में भी लोक अदालत का आयोजन किया गया। पीएलए (पीयूएस) कोर्ट ने 37 लंबित मामलों निपटारा किया और ट्रैफिक चालान के मामले चालान ब्रांच ने लंबित 8026 मामलों का निपटारा किया। रेवेन्यू कोर्ट अधिकारियों ने लंबित 3497 मामलों का निपटारा किया। प्रिंसिपल जज फैमिली कोर्ट न्यायाधीश प्रवीण कुमार लाल, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश सुखप्रीत, सिविल जज सीनियर डिवीजन मीनू, सिविल जज जूनियर डिवीजन विनीत कुमार, सिविल जज जूनियर डिवीजन मनीषा की बेंच ने मामलों का निपटारा किया।

लोक अदालत में कुल 16397 मामलें रखे गए। जिसमें से 13411 मामलों का निपटारा हुआ व कुल सेटलमेंट राशि 25361050 रुपए रही। जिला एवं सत्र न्यायाधीश अजय तेवतिया ने कहा कि लोक अदालत का लाभ अधिक से अधिक लोगों को उठाना चाहिए। क्योंकि लोक अदालत में मामले का निपटारा आपसी सहमति से होता है जिससे समय व धन की बचत होती है व आपसी सौहार्द भी बना रहता है।

स्वच्छता के प्रति आमजन को किया जा रहा जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

■ विद्यार्थी भी रैली निकालकर कर रहे हैं लोगों को जागरूक

हरियाणा शहरी स्वच्छता अभियान के तहत विभिन्न विभागों के अधिकारी सफाई व्यवस्था पर निगरानी रखते हुए लोगों को प्रेरित कर रहे हैं। साथ ही स्कूली विद्यार्थियों द्वारा भी जागरूकता रैली निकालकर आमजन को स्वच्छता के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि जिलेभर में चल रहे स्वच्छता अभियान के तहत क्षेत्र को गंदगी से मुक्त व स्वच्छ बनाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इस अभियान में प्रशासनिक अधिकारियों को जिम्मेवारी सौंपते हुए वार्ड वाइज नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है ताकि शहर में सफाई अभियान के तहत हो रही कार्यवाही पर नजर रखी जा सके। यदि कोई नागरिक कूड़ा इधर उधर फेंकते दिखाई देता है उस पर कार्यवाही की जा रही है। शहर को स्वच्छ बनाने की दिशा में सुधार के लिए अतिक्रमण भी हटवाया जा रहा है। साथ ही कूड़ा करकट इधर-उधर फेंकने, पॉलिथीन का उपयोग करने तथा अतिक्रमण करने वालों के चालान भी किए जा रहे हैं।

त्रिवेणी मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में हिंदी दिवस मनाया

प्रतियोगिताओं में हिंदी का महत्व किया उजागर

बच्चों द्वारा प्रस्तुत की गई कबीर अमृतवाणी ने विद्यालय के वातावरण को अध्यात्मिक्ता और भक्ति से सराबोर कर दिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

शहर के त्रिवेणी मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में विशेष प्रातः कालीन सभा का आयोजन किया गया। इसमें स्टॉफ के साथ विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। बच्चों ने कविता पाठ, भाषण, वाद-विवाद प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

प्रधानाचार्य अनिल कुमार, निदेशिका संगीता वर्मा तथा उपनिदेशिका सुमित्रा महला ने दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। बच्चों द्वारा प्रस्तुत की गई कबीर अमृतवाणी ने विद्यालय के वातावरण को अध्यात्मिक्ता और भक्ति से सराबोर कर दिया। सुमित्रा महला ने हिंदी भाषा को भारतीय संस्कृति और राष्ट्र की पहचान बताते हुए इसके संरक्षण एवं संवर्धन का संदेश दिया। विद्यार्थियों ने अपनी प्रस्तुतियों से हिंदी भाषा की समृद्धि और उपयोगिता को उजागर किया। कक्षा 11वीं से गीतांजलि ने अपनी कविता से मंत्रमुग्ध किया।

बहादुरगढ़। कार्यक्रम के दौरान मौजूद त्रिवेणी स्कूल के विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

निबंध लेखन में हिमांशी रही प्रथम

बहादुरगढ़। निबंध प्रतियोगिता में भाग लेते छारा कॉलेज के विद्यार्थी।

बहादुरगढ़। गांव छारा के चौधरी हरद्वारी लाल राजकीय महाविद्यालय में शनिवार को निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यकारी प्राचार्या डॉ. अनीता दलाल के दिशानिर्देशन में हिंदी विभाग अध्यक्ष डॉ मनोज कुमार द्वारा प्रतियोगिता आयोजित करवाई गई। निबंध प्रतियोगिता में हिमांशी ने प्रथम, तनु ने द्वितीय और नितिका ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर देवेंद्र, मोनिका, डॉ मनोज व रेखा आदि मौजूद रहे।

हिंदी को बताया एकता का प्रतीक

बहादुरगढ़। अशोका इंटरनेशनल स्कूल में हिंदी दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रिंसिपल जैनेंद्र कुमार द्वारा दीप प्रज्वलन व सरस्वती वंदना से हुआ। इसके बाद छात्रों ने हिंदी भाषा के महत्व पर भाषण, कविता-पाठ, वाद-विवाद तथा नाटक प्रस्तुत किए। प्रिंसिपल ने कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा ही नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान और एकता का प्रतीक है। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित किया कि वे हिंदी भाषा के प्रयोग को दैनिक जीवन में बढ़ावा दें। अंत में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए विद्यालय की निदेशिका विजयलक्ष्मी व चेयरमैन डॉ. अशोक शर्मा ने सभी छात्रों और शिक्षकों को बधाई दी।

बहादुरगढ़। प्रिंसिपल और शिक्षकों के संग विद्यार्थी।

बहादुरगढ़। विजेता छात्राओं को पुरस्कृत करती डॉ. सुदेश राठी व अन्य।

कविता पाठ में पूजा व भाषण में ज्योति रही प्रथम

बहादुरगढ़। शनिवार को राजकीय महिला महाविद्यालय बहादुरगढ़ में हिंदी विभाग द्वारा हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कविता पाठ व भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ. सुदेश राठी की अध्यक्षता में छात्राओं ने बढ़-चढ़कर इसमें भाग लिया। मंच संचालन द्वितीय वर्ष की छात्रा ज्योति देसवाल व ज्योति गुप्ता ने किया। निर्णायक मंडल में वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ सुदेश राठी, डॉ शिल्पा व डॉ सीमा शामिल थी। कविता पाठ प्रतियोगिता में द्वितीय वर्ष की छात्राओं पूजा ने प्रथम, ज्योति गुप्ता ने द्वितीय तथा झलक ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता में ज्योति देसवाल ने प्रथम, प्रीति द्वितीय तथा सारिका ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। संस्कृत की प्राध्यापिका डॉ सीमा ने सारे जहां से अच्छा गीत गाकर समारोह को अधिक रोचक बनाया। उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को पुरस्कार वितरित किए गए। डॉ सुदेश राठी ने छात्राओं को हिंदी भाषा के महत्व के बारे में बताते हुए ऐसी गतिविधियों में ज्यादा से ज्यादा भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

झज्जर। कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

हिंदी को गर्व से अपनाए नई पीढ़ी : पंकज वालिया

झज्जर। हिन्दी दिवस की पूर्व संध्या पर डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्कूल के प्राचार्य पंकज वालिया ने हिंदी भाषा के उपयोग पर बल देते हुए कहा कि हिंदी भारत माता के माथे की बिंदी है। हिंदी भाषा की बदौलत ही देश की पहचान है। यह केवल भाषा नहीं, बल्कि हमारी पहचान, संस्कृति और गौरव का प्रतीक है। नई पीढ़ी को चाहिए वह हिंदी को गर्व से अपनाए। उन्होंने कहा कि इसे वैज्ञानिक, सामाजिक व प्रशासनिक क्षेत्रों में अधिकाधिक प्रयोग में लाना चाहिए। कार्यक्रम में आर्य समाज के प्रधान राजीव आर्य ने भी विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के महत्व से अवगत कराया। इस दौरान विद्यार्थियों द्वारा कविता पाठ, भाषण, नाटक और गीत के माध्यम से हिंदी भाषा की महत्ता, समृद्धि और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाया।

आम आदमी के अधिकारों की भाषा है हिंदी

बहादुरगढ़। हर साल की तरह इस बार भी हम 14 सितंबर रविवार को हिंदी दिवस मनाएंगे। इस अहम अवसर पर हिंदी शिक्षिका डॉ. नरेश कुमारी डबास ने सवाल उठाया कि जब शिक्षा, चिकित्सा और न्याय आम आदमी की अपनी भाषा में न हों, तो अधिकार केवल कागज पर रह जाते हैं। हिंदी को आमजन के अधिकार और जीवन की भाषा बनाना ही इसका असली सम्मान है। हरिभूमि से विशेष बातचीत में डॉ. नरेश कुमारी डबास ने कहा कि देश की अधिकांश जनता हिंदी बोलती और समझती है। लेकिन अदालत, अस्पताल और महाविद्यालयों में होने वाले उनकी जिंदगी के सबसे अहम फैसले अधिकांश अंग्रेजी में लिखे और सुनाए जाते हैं। हिंदी दिवस केवल भाषाई सम्मान का नहीं, बल्कि आम लोगों के अधिकारों को सुरक्षित करने का संकल्प भी है। अगर न्याय हिंदी में होगा, तो फैसले जनता समझ पाएगी। अगर स्वास्थ्य की जानकारी हिंदी में होगी, तो समुचित इलाज हर किसी तक पहुंचेगा। अगर शिक्षा हिंदी में होगी, तो प्रतिभा जाति, वर्ग और क्षेत्र की दीवारों को लांघ पाएगी। न्यायपालिका और चिकित्सा जगत में अंग्रेजी का दबदबा है। ऐसे में हिंदी में अनुवाद और मूल सामग्री उपलब्ध करवाने की जरूरत है। शिक्षा में अंग्रेजी को ही श्रेष्ठ मानने की प्रवृत्ति से बचने के लिए हिंदी माध्यम के उच्च शिक्षा संस्थानों और रिसर्च को बढ़ावा देना होगा। डिजिटल युग में संसाधनों की कमी दूर करने के लिए हिंदी आधारित तकनीकी टूल्स, ऐप्स और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म विकसित करने होंगे। हिंदी यदि केवल साहित्य या सांस्कृतिक उत्सव तक सीमित रही तो आम आदमी अपने ही देश में पराया महसूस करता रहेगा। हिंदी को हर दिन, हर क्षेत्र में जीवन की भाषा बनाना होगा, अन्यथा समाज के सर्वांगीण विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

कविता व भाषण के माध्यम से बताया हिंदी का महत्व

झज्जर। कैंब्रिज इंटरनेशनल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भदाना में शनिवार को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य प्रार्थना सभा में आयोजित इस कार्यक्रम में केजी से दसवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया। उन्होंने कविताओं व भाषण के माध्यम से हिंदी भाषा की महत्ता पर अपने विचार प्रस्तुत किए। आठवीं से दसवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने हिंदी भाषा का जीवन में महत्व पर विषय भाषण एवं कविता की प्रस्तुति दी तथा हिंदी भाषा की महत्ता पर आधारित एक नाटक का मंचन किया। इनके अलावा तीसरी से पांचवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के बीच लेखन प्रतियोगिता भी कराई गई। विद्यालय निदेशक धर्मेंद्र जून ने विद्यालय की हिंदी शिक्षिकाओं को सम्मानित करते हुए कहा कि हिंदी केवल हमारी भाषा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। इस मौके पर हिंदी अध्यापिकाएं अनीता रानी, आशु, पिंकी, प्रियंका व मातृ शिक्षिकाएं ज्योति, प्रीति, आंचल, प्रियंका, शीला सहित अन्य भी उपस्थित रहीं।

झज्जर। कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थी एवं शिक्षक। फोटो : हरिभूमि

बहादुरगढ़। बैठक में चर्चा करते धर्मशाला समिति के पदाधिकारी व सदस्य। फोटो : हरिभूमि

आम बैठक में धर्मशाला समिति ने किया मंथन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

लाइनपार स्थित सूर्य कवि पंडित लख्मीचंद धर्मशाला समिति के सदस्यों की आम बैठक शनिवार को धर्मशाला परिसर में आयोजित हुई। बैठक में निर्णय लिया गया कि हरियाणवी संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए नवंबर में 5 दिवसीय हरियाणवी सांग का आयोजन किया जाएगा।

पंडित लख्मीचंद धर्मशाला समिति के अध्यक्ष प्रवीण शर्मा और महासचिव सतीश शर्मा ने बैठक उपरांत बताया कि समिति की ओर से 5 से 9 नवंबर तक पंडित लख्मीचंद के सुपौत्र पंडित विष्णुदत्त दर्शकों को विभिन्न किस्से रागिनी के माध्यम से सुनाएंगे। धर्मशाला के आधुनिकरण करवाने पर भी चर्चा हुई। धर्मशाला परिसर में एक कमरे का निर्माण, दीवारों पर टाईल लगवाने व कार्यालय में सभी पुरानी कार्यकारिणी के बोर्ड लगवाने का निर्णय लिया गया।

ये रहे मौजूद

बैठक में पालेराम शर्मा, बलराम गौतम, हरिओम हरितश, रमेश शर्मा, रामकंवार मुदगिल, मामन राम, मंजीत पाराशर, दीपक राज शर्मा, रमेश दीक्षित, बंटी पाराशर, पवन दीक्षित, रमेश कौशिक, मनोज भारद्वाज, बिल्लू पाराशर, नरेंद्र शर्मा, सतीश भारद्वाज, सुरेश शर्मा व रोशन लाल आदि उपस्थित रहे।

शिविर में 103 रक्तदाताओं ने किया रक्तदान

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा के जन्मदिन के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा के जन्मदिन के उपलक्ष्य में युवा एवं जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शहर की दीनबंधू चौधरी छोटूराम किसान धर्मशाला में आयोजित रक्तदान शिविर में युवा कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष निशित कटारिया, वरिष्ठ कांग्रेस नेता राज सिंह जाखड़ व एडवोकेट विकास अहलावत ने मुख्यातिथि के रूप में शिरकत करते हुए रक्तदाताओं को बैज लगाकर उनका उत्साह बढ़ाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कांग्रेस जिलाध्यक्ष संजय यादव ने की। युवा कांग्रेस के शहरी अध्यक्ष रामअवतार उर्फ दीपक गहलावत ने बताया कि शिविर में रक्त एकत्रण का कार्य एम्स संस्थान बाढ़सा की टीम ने किया।

इस दौरान कुल 103 यूनिट रक्त एकत्रित की गई। रक्तदान करने वाले सभी युवाओं को मुख्यातिथि व आयोजक कमेटी सदस्यों द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर डॉक्टर सुनील जाखड़, जेपी कादियान, रामानंद दलाल, राजबीर दहिया, कर्मबीर महराणा, संजीत कबलाना, धर्म सिंह बाल्मीकि, सोनू बाल्याण, वीरेंद्र कौशिक, धर्मेंद्र राणा, संदीप दहिया, वरुण दलाल, जसवंत दुल्हेड़ा, रोहताश शर्मा, डॉक्टर रिंकू, मुकेश राव, दिनेश यादव सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

झज्जर। रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र भेंट करते हुए कांग्रेस नेता। फोटो : हरिभूमि

बहादुरगढ़। नितिन गडकरी के हाथों अवार्ड प्राप्त करते राम दलाल के प्रतिनिधि।

राम दलाल बस सर्विस को मिला भारत प्रवास अवार्ड

बहादुरगढ़। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने बीते दिनों हुए कार्यक्रम में बहादुरगढ़ की राम दलाल बस सर्विस को भारत प्रवास अवार्ड प्रदान किया। कार्यक्रम में देशभर के बस मालिकों को बुलाया गया था। कार्यक्रम में बस संचालकों ने केंद्रीय मंत्री से सुविधाओं से संबंधित अनेक सवाल किए और सुझाव देते हुए विस्तृत चर्चा की।

बहादुरगढ़। बैठक में चर्चा करते मल्टी पर्पज हेल्थ ऑफिसर। फोटो : हरिभूमि

छारा में हुई एमपीएचओ की मासिक बैठक

बहादुरगढ़। मल्टी पर्पज हेल्थ ऑफिसर एसोसिएशन की ब्लॉक इकाई की मासिक मीटिंग छारा में हुई। जिसकी अध्यक्षता संदीप तथा मंच संचालन अनिल ने किया। बैठक में कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए पदों को भरा गया। एसएमओ के साथ विभिन्न समस्याओं पर विस्तृत रूप से चर्चा की गई। इस अवसर पर राजीव, अजय राठी, रविंद्र, रवि, हरीश, प्रमिला, प्रियंका, सुनीता, मोनिका, मुकेश राठी आदि मौजूद रहे।

इस्कॉन मंदिर के निकट 22 लाख में बनेंगी 5 गलियां

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

शहर के वार्ड नंबर-8 में इस्कॉन मंदिर के आसपास की पांच गलियों का निर्माण 22 लाख रुपए की लागत से किया जाएगा। सीसी से गालियां बनाई जाएंगी। शनिवार को चेयरपर्सन सरोज राठी ने इन गलियों के निर्माण कार्य का शुभारंभ किया।

पार्षद प्रवीण छिल्लर और इस्कॉन मंदिर के प्रबंधक इन गलियों में लंबे समय से बरसात के दिनों में जलभराव की समस्या की शिकायत उठा रहे थे। स्थानीय लोगों और मंदिर आने वाले श्रद्धालुओं को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता था।

चेयरपर्सन सरोज राठी ने इन गलियों के निर्माण का श्रीगणेश करते हुए कहा कि निर्माण कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही या गुणवत्ता से समझौता नहीं होगा। पार्षद प्रवीण छिल्लर ने चेयरपर्सन सरोज राठी का विशेष आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर पार्षद राजेश तंवर, रमेश राठी, हर्मेन्द्र राणा, बंटी रुहिल, दीपक हुड्डा, नरेश राणा, धर्मबीर छिकारा, देवेंद्र दहिया, अनिल आदि मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। गलियों के निर्माण का नारियल फोड़ती सरोज राठी व अन्य। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10× 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

कुश्ती और कबड्डी पर शोधपत्र लेकर जापान रवाना हुआ छारा का सागर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

गांव छारा के युवा पहलवान और शोधार्थी सागर दलाल ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम रोशन करने की दिशा में एक और कदम बढ़ाया है। लाला दीवान चंद आधुनिक कुश्ती एवं योग केंद्र के कुश्ती प्रशिक्षक और स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी ऑफ हरियाणा का छात्र सागर दलाल जापान की राजधानी टोक्यो के लिए रवाना हुआ है।

सागर वहां, 12 से 16 सितंबर तक आयोजित 15वीं अंतरराष्ट्रीय कंप्यूटर साइंस संगोष्ठी में हिस्सा लेगा। इस प्रतिष्ठित संगोष्ठी में सागर दलाल भारत की ओर से अपने विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करेगा। वह अपने शोध पत्र कबड्डी और कुश्ती खिलाड़ियों पर प्रतिरोधात्मक व्यायामों का प्रभाव.. विषय पर मौखिक प्रस्तुति देगा। टोक्यो रवाना होने से पहले हरियाणा खेल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अशोक कुमार, अंतरराष्ट्रीय कोच वीरेंद्र आर्य, डीन योगेश चंद्र ने सागर व उसके साथी संयम मलिक को शुभकामनाएं दीं।

वहीं, वीरेंद्र अखाड़ा में भी सागर व संयम का अभिनंदन हुआ। शुभकामनाओं के साथ सागर व संयम को विदा किया गया। पिता वीरेंद्र आर्य ने कहा कि सागर का यह अंतरराष्ट्रीय मंच पर जाना न केवल उनके परिवार व विश्वविद्यालय बल्कि पूरे हरियाणा के लिए गर्व की उपलब्धि है।

बहादुरगढ़। जापान रवाना होने से पहले अखाड़े में पहलवानों के साथ सागर। फोटो : हरिभूमि

जलभराव प्रभावितों तक पानी पहुंचा रहा प्रवीण

बहादुरगढ़। इनेलो के युवा हलका महासचिव प्रवीण राठी द्वारा शहर की कई कॉलोनियों में जलभराव की समस्या झेल रहे लोगों को निःशुल्क पेयजल उपलब्ध कराया जा रहा है। उन्होंने बताया कि उनका परिवार पिछले 30 सालों से इनेलो से जुड़ा है। पूर्व विधायक स्व. नफे सिंह राठी उनके आदर्श रहे हैं। छोटूराम नगर की कई गलियों में 4-5 फुट तक पानी जमा हो गया, जिसके चलते लोगों को पेयजल के लिए भी परेशान होना पड़ रहा है। इस परेशानी को देखते हुए उन्होंने निःशुल्क आरओ के पानी की सप्लाई शुरू की।

बहादुरगढ़। लोगों को पानी उपलब्ध करवा रहे प्रवीण राठी। फोटो : हरिभूमि

विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली तीसरी भाषा हिंदी की जड़ें प्राचीन भारतीय आर्य भाषा परिवार की है, जिसकी जननी संस्कृत है। संस्कृत, जिसे 'देववाणी' भी कहा जाता है। इसकी विशिष्टताओं ने हिंदी को आज विश्व के कोने-कोने तक पहुंच दिया है। अगर इसके प्रसार के लिए कुछ और प्रयास किए जाएं तो निस्संदेह इसका वर्चस्व और भी बढ़ेगा।

भारत की आत्मा है हिंदी

विश्व में 61 करोड़ हिंदी भाषी

वर्ल्ड लैंग्वेज डेटाबेस के अनुसार, हिंदी भाषा वर्तमान समय में 61 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है। विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस में स्थित है। यह सचिवालय हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए 11 फरवरी 2008 से कार्यरत है। हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए समय-समय पर अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है।

राजभाषा विभाग के प्रयास

सन 2019 से सभी 59 मंत्रालयों में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया। अब तक कुल 528 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन भी किया जा चुका है। विदेशों में भी लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई एवं पोर्ट-लुई में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां बनाई गई हैं। भारत ने संयुक्त राष्ट्र में हिंदी भाषा के उपयोग को बढ़ावा देने की भी पहल की है। पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन बनारस में 13-14 नवंबर, 2021 को तथा 14 सितंबर 2022 को सूरत में दूसरा सम्मेलन आयोजित किया गया। इस साल पुणे में तीसरा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। विभाग ने कुल 90 हजार शब्द का एक 'ई-महाशब्दकोष' मोबाइल एप तथा लगभग 9 हजार वाक्य का 'ई-सरल' वाक्यकोष भी तैयार किया है।

हिंदी की विशिष्टताएं

देवनागरी लिपि: हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, जो देखने में मनमोहक और ध्वन्यात्मक रूप से सटीक है। इसमें 11 स्वर एवं 33 व्यंजन हैं, जिनमें प्रत्येक ध्वनि का अलग स्वर एवं उच्चारण है।

स्वर की लंबाई: हिंदी में कुछ स्वर ध्वनियों का उच्चारण विस्तारित अवधि के साथ किया जा सकता है, जिससे शब्दों का अर्थ बदल जाता है। उदाहरण के लिए, 'मा' का अर्थ 'मां' है, जबकि 'मान' का अर्थ 'सम्मान' है।

मानद रूप: हिंदी व्यक्तियों को सम्मानपूर्वक संबोधित करने के लिए मानद रूपों को शामिल करती है। बड़ों, सम्मानित व्यक्तियों या उच्च सामाजिक स्थिति वाले व्यक्तियों से बात करते समय सम्मानजनक सर्वनामों, क्रिया रूपों एवं वाक्य संरचनाओं का उपयोग भाषा के सांस्कृतिक प्रभाव को सम्मान एवं शिष्टाचार के साथ प्रदर्शित करता है।

लिंग वाली संज्ञा: हिंदी में संज्ञाओं के तीन लिंग हैं। पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एवं नपुंसकलिंग। एक संज्ञा का लिंग अकसर विशेषणों, क्रियाओं तथा सर्वनामों के समझौते को निर्धारित करता है, जो इसके साथ उपयोग किए जाते हैं।

सर्वनाम का अंतर: हिंदी एकवचन के लिए औपचारिक एवं अनौपचारिक सर्वनामों के बीच अंतर करती है। औपचारिक सर्वनाम 'आप' का प्रयोग सम्मान दिखाने या उच्च पदस्थ व्यक्ति को संबोधित करने के लिए किया जाता है, जबकि अनौपचारिक सर्वनाम 'तुम' का प्रयोग समान सामाजिक स्थिति वाले व्यक्तियों के साथ किया जाता है।

जटिल क्रिया प्रणाली: हिंदी की क्रिया प्रणाली में विभिन्न क्रिया रूप एवं काल हैं। क्रियाओं का संयोजन तनाव, पहलू, मनोदशा एवं विषय के साथ समझौते जैसे कारकों से प्रभावित होता है, जिससे भाषा की क्रिया संरचना जटिल तथा अभिव्यंजक हो जाती है।

संस्कृत का प्रभाव: हिंदी पर संस्कृत का गहरा प्रभाव है। कई हिंदी शब्दों की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है, जो शब्दावली को समृद्ध करती है तथा भारत की प्राचीन सांस्कृतिक एवं दार्शनिक परंपराओं के साथ गहरा संबंध प्रदान करती है।

ध्वनि विविधता: हिंदी में ध्वनियों की एक विस्तृत श्रृंखला है, जिसमें स्वर, व्यंजन एवं नासिक्य ध्वनियां हैं। इसकी ध्वन्यात्मक सूची विविध मधुर उच्चारण प्रवाहित करती है।

क्षेत्रीय विविधता: भारत के विभिन्न हिस्सों में हिंदी की विभिन्न क्षेत्रीय बोलियां तथा शैली है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी शब्दावली, उच्चारण एवं व्याकरणिक विविधताएं हैं, जो हिंदी भाषी जनमन के भीतर भाषाई विविधता को दर्शाती हैं।

अभी अधूरा है विकास

हिंदी अपनी वैश्विक पहचान रखती है, किंतु इसके विकास के लिए अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है।

तकनीकी विकास: हिंदी में तकनीकी शब्दावली को अधिक विकसित करने की आवश्यकता है, ताकि विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में इसका उपयोग बढ़ सके।

मानकीकरण एवं सरलता: बोल-चाल एवं लेखन में एकरूपता लाने के लिए मानकीकरण को बढ़ावा देना आवश्यक है।

सरकारी प्रोत्साहन: सरकार को हिंदी के उपयोग को सभी क्षेत्रों में बढ़ावा देना चाहिए, विशेषकर शिक्षा एवं प्रशासनिक कार्यों में।

वैश्विक मंचों पर उपयोग: अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के प्रयास होने चाहिए। *

आवरण कथा / भूपेंद्र शर्मा

आज हिंदी भाषा भारत तक सीमित नहीं है। यह विश्व भर में एक सशक्त पहचान बना चुकी है। दुनिया के कई देशों में लाखों लोगों द्वारा बोली जाती है। भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में, हिंदी सीखने से भारतीय आबादी के एक बड़े हिस्से के साथ संवाद एवं जुड़ने का अवसर मिलता है। भारत की विविध सांस्कृति, जीवंत अर्थव्यवस्था तथा समृद्ध विरासत हिंदी को यात्रा, कार्य एवं सांस्कृतिक खोज के लिए एक श्रेष्ठ माध्यम बनाती है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत के बढ़ते प्रभाव के कारण हिंदी में कुशल पेशेवरों की मांग बढ़ रही है। कई बहुराष्ट्रीय कंपनियां, विशेष रूप से जिनके भारत में निर्माण, उत्पादन कार्य या ग्राहक हैं, उन कर्मचारियों को महत्व देती है, जो हिंदी में प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं। हिंदी सीखना करियर की संभावनाओं को बढ़ा सकता है, खासकर अंतरराष्ट्रीय व्यापार, पर्यटन, पत्रकारिता, अनुवाद एवं कूटनीतिक सेवाओं जैसे क्षेत्रों में।

क्षेत्रीय भाषाओं का प्रवेश द्वार

हिंदी का विकास कई चरणों में हुआ। अपभ्रंश से होते हुए, इसने अपनी वर्तमान पहचान बनाई है। मध्यकाल में खड़ी बोली के रूप में इसने अपनी नींव रखी, जो आगे चलकर आधुनिक हिंदी का आधार बनी। हिंदी भारत में बोली जाने वाली विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं को समझने एवं सीखने के लिए एक प्रवेश द्वार की तरह है। बंगाली, मराठी, गुजराती एवं पंजाबी सहित कई क्षेत्रीय भाषाएं व्याकरण, शब्दावली तथा लिपि के मामले में हिंदी के साथ समानताएं साझा करती हैं।

फिल्म उद्योग तक पहुंच

भारतीय फिल्म उद्योग में प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में फिल्मों का निर्माण होता है, जिन्हें भारत में ही नहीं, विश्व के अनेक देशों में देखा जाता है। हिंदी सिनेमा की विश्व में अद्भुत लोकप्रियता है। विदेशों में हिंदी के प्रसार में हिंदी फिल्मों का बड़ा योगदान है। हिंदी फिल्में, हिंदी गीत एवं टीवी शो की जीवंत दुनिया हिंदी सीखने वालों के लिए बड़ा सरल माध्यम है। वहीं इनके माध्यम से विश्वभर में फैले भारतीय प्रवासियों के साथ भारत एवं भारतीय संस्कृति के अटूट, मधुर संबंध स्थापित होते हैं। इसीलिए हिंदी को भारत की आत्मा कहते हैं।

हिंदी दिवस और संविधान में स्थान

हिंदी दिवस मनाने का इतिहास भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ा है। 14 सितंबर 1949 को, भारतीय संविधान सभा ने हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया। यह निर्णय हिंदी को राष्ट्र की एकता के सूत्र के रूप में स्थापित करने के लिए लिया गया था। पहला हिंदी दिवस 1953 में मनाया गया। यह दिन हमें भाषा के महत्व और उसके संरक्षण की याद दिलाता है। भारतीय संविधान के भाग-17 में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा संबंधी उपबंध हैं। अनुच्छेद 120 (संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा) भाग 17 में अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा। अनुच्छेद 343 (संघ की राजभाषा) संघ की राजभाषा हिंदी एवं लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा।

विचारणीय / लोकमित्र गौतम

इसे विडंबना ही कहना चाहिए कि जिस हिंदी को बोलने, जिसमें मनोरंजन करने में युवा पीढ़ी खूब आनंद लेती है, उसे ही लिखने और पढ़ने में असहज रहती है। हालांकि इसके लिए सिर्फ वही नहीं जिम्मेदार है। ऐसे में इस समस्या के निराकरण के लिए परिवार, समाज से लेकर व्यवस्था तंत्र को भी विचार करना होगा।

हिंदी को लेकर सहज नहीं युवा पीढ़ी

भारत की कुल आबादी में से 65 फीसदी से ज्यादा युवा हैं, जिनकी उम्र 35 साल या इससे कम है। इनमें से 60 से 65 फीसदी युवा फर्राटे से हिंदी बोलते-समझते हैं। ये आमतौर पर हिंदी फिल्में भी देखते हैं और ओटीटी प्लेटफॉर्म पर भी हिंदी के कार्यक्रम चाव से देखते हैं। मगर इनकी एक ऐसी कमजोरी है, जिस पर आम लोगों का यकायक ध्यान नहीं जाता। इनमें से करीब आधे युवा ऐसे हैं, जो हिंदी बोलते हैं, समझते हैं, लेकिन प्रवीणता से हिंदी पढ़ और लिख नहीं पाते। कुछ पढ़ते भी हैं तो सहजता से शुद्ध-शुद्ध नहीं पढ़ पाते।

आधी युवा आबादी है असहज: देश में हिंदी बोलने वाले करीब आधे युवा हिंदी में कतई सहज नहीं है। ऊपर से देखने में यह कोई बहुत बड़ी समस्या नहीं लगती। यहां तक कि हिंदी भाषी मां-बाप को भी अपने हिंदी लिख और पढ़ न पाने में असहज बच्चों से किसी तरह की भावनात्मक परेशानी नहीं होती, लेकिन सच बात यह है कि हिंदी की सबसे कमजोर कड़ी यही युवा पीढ़ी है, जो ऊपर से तो हिंदी में बहुत सहज दिखती है, मगर भीतर से हिंदी को लेकर बिल्कुल असहज है। दरअसल, यही वह पीढ़ी है, जो अप्रत्यक्ष रूप में हिंदी को मौखिक भाषा तक सीमित करने में लगी है।

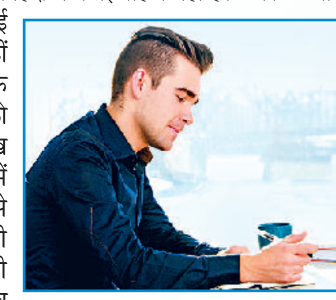

शैक्षिक-सांस्कृतिक विडंबना: यह सचमुच हिंदी के साथ बड़ी भाषाई विडंबना है, क्योंकि हिंदी बोलने वाले, हिंदी पढ़ने वाले, हिंदी में मनोरंजन करने वाले युवा बाहरी तौर पर यह प्रभाव देते हैं कि जैसे वो हिंदी सेवी हों। पर वास्तव में वो हिंदी सेवी नहीं होते। दक्षिण भारत में खासकर बेंग्लुरु, चेन्नई में जिन उत्तर भारतीय युवाओं की पहचान हिंदीभाषी होने से है, वास्तव में ये हिंदीभाषी समझे जाने वाली युवा पीढ़ी का बड़ा हिस्सा भी उन्हीं की तरह हिंदी में असहज है। भले यह बाहरी तौर पर हिंदी वाले लगते हों, पर सचमुच में ये हिंदी वाले नहीं हैं, हिंदी को इनसे फायदा कम, नुकसान ज्यादा होता है, क्योंकि हिंदी बोलना, हिंदी में बातें करना, हिंदी में मनोरंजन करना, लेकिन हिंदी लिख और पढ़ न पाना या इसमें सहज न हो पाना, सिर्फ भाषाई समस्या नहीं है। यह सांस्कृतिक और शैक्षिक त्रासदी भी है।

नहीं है हिंदी की गहरी समझ: दक्षिण या पश्चिम भारत के बड़े शहरों में ही नहीं बल्कि उत्तर भारत के भी बड़े शहरों में ऐसे युवाओं की भरमार है। दिल्ली में भी 25 से 30 फीसदी ऐसे युवा हैं, जो बस हिंदी में बातें करते हैं, गाने सुनते हैं, वेब सीरीज देखते हैं, लेकिन सौ शब्दों का आवेदनपत्र हिंदी में नहीं लिख सकते। घंटों हिंदी में बहस करने वाले उस विषय पर एक पेज भी हिंदी में नहीं लिख पाते। यह इसलिए बड़ी समस्या है कि इससे हिंदी की असली समस्या पर पर्दा पड़ा रहता है। यह भ्रम बना रहता है कि हिंदी, बोलने, जानने और समझने वाले बहुत बड़ी तादाद में लोग हैं। लेकिन यह ऐसी ढोल के भीतर पोल वाली खोखली पीढ़ी है, जो न तो हिंदी का साहित्य जानती है, न कविता जानती है, न हिंदी के अखबार पढ़ती है और न ही हिंदी के ऐतिहासिक दस्तावेजों से ही इसका कोई परिचय है। ऐसे में भला यह पीढ़ी हिंदी का कैसे भला करेगी? यह तो उल्टा हिंदी में रह कर ही हिंदी को कमजोर करती है।

पहचान होती है मातृभाषा: अगर आप ऐसी पृष्ठभूमि से आते हैं कि आपके घर की भाषा यानी मातृभाषा हिंदी है और पढ़ाई और कामकाज की भाषा अंग्रेजी है, तो भले रोज के कामकाजी घंटों में आपको यह खुशफहमी रहती हो कि अपनी कमजोर हिंदी को लेकर आपमें किसी तरह की असहजता नहीं है, लेकिन वास्तविकता यह होती है कि अगर हम अपनी मातृभाषा को पढ़ने और लिखने में सहज नहीं होते तो हमारे अंदर एक स्वतः जन्मी हीन भावना हर समय रहती है। जो लोग अपनी मातृभाषा को सही से लिखना, पढ़ना नहीं जानते, उन्हें अपनी दुनिया के सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों का भी पता नहीं होता। दिन रात अंग्रेजी पढ़ने वाले ज्यादातर भारतीय अंग्रेजी के मुहावरों, उसकी लोकोक्तियों में मौजूद गहरे सांस्कृतिक संदर्भों से कभी नहीं जुड़ पाते, इसलिए बहुत सी बातों को वो कभी भी गहराई से समझ नहीं पाते। हमें लिपि की कठिनाई का बहाना बनाकर अपनी भाषा से नहीं कटना चाहिए। एक बार अगर हम अपनी भाषा से कट गए, तो हम अपनी स्मृतियों से, पीढ़ीगत धरोहरों से और साहित्यिक विरासत से भी कट जाते हैं।

डिजिटल जीवनशैली का प्रभाव: इसमें आज की डिजिटल लाइफस्टाइल और बाहर के देशों से आने वाली तकनीकी का भी हाथ है। लेकिन इस आरोप से तो हम अपनी भाषा के साथ लगाव न रख पाने को सही नहीं ठहराते। माना कि डिजिटल युग में मोबाइल और सोशल मीडिया में रोमन लिपि में लिखे, पढ़े जाने का चलन है, जिससे देवनागरी की प्रैक्टिस खत्म होती है। लेकिन यह यूं ही स्वतः नहीं पैदा हो गया। इस स्थिति के पैदा होने में बकायदा सांस्कृतिक संदर्भों का योगदान है। आज जिस तकनीक का आप अपने जीवन में इस्तेमाल कर रहे हैं, वह किसी हिंदी भाषी ने नहीं विकसित की, वह इस तकनीक को हिंदी के अनुकूल क्यों विकसित करता? अतः हिंदी के साथ अपने सहज और आत्मीय रिश्ते आपको खुद ही रखने है, इसके लिए किसी तकनीकी कमी या उसके संकट को बहाना नहीं बना सकते। *

व्यंग्य / सूर्य कुमार पांडेय

हिंदी से हमें आशा है। हिंदी हमारी राजभाषा है। इसके स्मरण मात्र से पुलकित हो उठता हमारा अंग-अंग है। हिंदी हमारी मदर टंग है। मैं कहां तक करूं हिंदी की महिमा का बखान? हिंदी है सूर, तुलसी, मीरा, रसखान। इसीलिए हम इसकी पूजा करते हैं।

हिंदी हमारी मदर टंग है

मुझे हिंदी दिवस के एक कार्यक्रम में जाना पड़ा। मैं जैसे ही माइक के सामने हुआ खड़ा, आयोजक ने कहा, 'आज आपको हिंदी पर एक कविता जरूर सुनानी है।'

मैंने कहा, 'तो सुनिए, जो हिंदी की कहानी है। हिंदी समस्त भारतीय भाषाओं की रानी है। हिंदी का बड़ा सम्मान है। यह हमारी आन-बान-शान है। इस पर हमें गर्व है, दर्प है, अभिमान है। क्योंकि हिंदी महान है।

हिंदी से हमें आशा है। हिंदी हमारी राजभाषा है। इसके स्मरण मात्र से पुलकित हो उठता हमारा अंग-अंग है। हिंदी हमारी मदर टंग है। मैं कहां तक करूं हिंदी की महिमा का बखान? हिंदी है सूर, तुलसी, मीरा, रसखान। इसीलिए हम इसकी पूजा करते हैं। वर्ष भर पूजाघरों में मूर्तिवत सजाकर-संवार कर धरते हैं। इस भाषा में नहीं है कोई खोट। इसे साल के बाकी दिनों में तलाशो तो हिंदी वैसे ही मिला करती है, जैसे किसी माफिया के पूजाघर में रखे हुए नंबर दो के करेंसी नोट।

हिंदी हमारी अभिलाषा है। यह हमारी राजभाषा है। इसलिए इसकी पूजा करना हमारी मजबूरी है। जैसे आज की सियासत में अशालीन होना जरूरी है।

हिंदी का बड़ा महत्व है। हिंदी से हमें ममत्व है। हिंदी हमारे लिए वैसे ही है, जैसे गांव वालों के लिए मेला, जैसे मजदूरों के लिए ठेला और रैली में रेला। हिंदी हमारी शोभा है, हमारा अलंकार है। हिंदी हमारा अंतिम प्यार है। हिंदी का नाम लेते ही हमारे अधरों पर फूल खिलते हैं। हिंदी हमारे लिए इसलिए भी प्यारी है

क्योंकि हिंदी में मांगों तो वोट भी आसानी से मिलते हैं। इसीलिए तो हर राजनेता हिंदी के साथ दिखता है। अहिंदी भाषी सियासातदान भी हिंदी सीखता है।

हिंदी पर अब और कितना सुनाऊं मेरे भाई? हिंदी हमारे भाल की बिंदी है, और लोग हैं कि इतनी-सी बात समझ पाते नहीं कि मर्द बिंदी लगाते नहीं। तो आधी आबादी को छूट, बच गई आधी तो उसको भी है आजादी कि फैशन से फुर्सत हो तो बिंदी लगाएं। इस विदेशी कल्चर की क्यारी में हम कैसे हिंदी का प्लांट लगाएं? कहिए, आयोजक जी, अभी भी आपका मन नहीं भरा हो तो हम हिंदी पर और भी सुनाएं।'

आयोजक बोला, 'अब आप कृपापूर्वक जाएं और नेक्स्ट ईयर अगेन हिंदी पर ऐसी ही एक नई कविता लिखकर अवश्य लाएं।' *

लघुकथा / शीला श्रीवास्तव

हिंदी बनाम इंग्लिश

रिया बहुत देर से अपने कमरे में चहलकदमी कर रही थी। नमिता ने पूछा, 'क्या बात है बेटी, क्यों परेशान हो?'

'मेरे स्कूल में पैरेंट्स मीटिंग है, और पापा घर पर नहीं हैं।' रिया खीझे स्वर में अपनी मम्मी से बोली।

'अरे तो क्या हुआ? मैं हूं ना। मैं चलती हूं पैरेंट्स मीटिंग में।' मां बोलीं।

'आप तो रहने ही दें। आपको इंग्लिश बोलना कहां आती है? आप आएंगी तो मेरा स्कूल में मजाक ही बनेगा।' रिया का जवाब सुनकर मां स्तब्ध रह गई। इस बात के लिए वह अकसर अपने पति से भी खरी-खोटी सुनती थी, आज बेटी ने भी सुना दिया। कुछ दिनों बाद स्कूल में हिंदी दिवस के अवसर पर एक प्रतियोगिता का आयोजन होने वाला था, जिसका शीर्षक था, 'हिंदी बनाम इंग्लिश।' रिया जानती थी, मम्मी की हिंदी पर बहुत अच्छी पकड़ है। उसने पहले मम्मी से अपने पिछले बर्ताव के लिए मांफी मांगी फिर बोली, 'मम्मी, प्लीज आप मेरे लिए एक स्पीच लिख कर दे दीजिए।' मां पूरे मनोयोग से स्पीच लिखने में जुट गई। उसकी मेहनत रंग लाई। रिया को प्रथम पुरस्कार मिला। स्कूल से आते ही रिया अपनी मम्मी के गले लग गई, बोली, 'आपके लिखे स्पीच ने आज मुझे स्कूल में फेमस कर दिया। यूं आर ग्रेट मम्मी! यह पुरस्कार मैं आपको समर्पित करती हूं।'

अपनी बेटी की नजरों में अपने लिए सम्मान देख मां की आंखें खुशी से छलक आईं। *

इंजेक्शन की नवीन तकनीक से स्पाइन रोगों का उपचार

सर्जरी के बिना ही सिर्फ इंजेक्शन तकनीक के जरिये स्पाइन (रीढ़) रोगों का बेहतर और विश्वसनीय उपचार विश्वविख्यात डॉ. प्रमोद पहारिया द्वारा ग्वालियर में हो रहा है। आईये जानते हैं इस तकनीक के असाधारण लाभ-

मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश ने डॉ. प्रमोद पहारिया को प्राईड ऑफ एम.पी. अवार्ड दिया।

इस ट्रीटमेंट की कितनी बार आवश्यकता होती है?
सिर्फ एक ही बार पर्याप्त है।

सर्जरी की अपेक्षा इस तकनीक के क्या फायदे हैं?
सर्जरी के दौरान पैरालिसिस, पैलाप्लेजिया, ब्लैडर एवं बोवेल के कंट्रोल में क्षति, पैरों में कमजोरी, इंफेक्शन, इंप्लांट फैलियर जैसे जो कॉम्पिलकेशन देखने को मिलते हैं, वैसा इसमें खतरा नहीं है।

किन मरीजों का इलाज इस तकनीक से संभव है?
डिस्क प्रोलेप्स जैसे L4-L5, L5-S1, साइटिका, लंबर या सर्वाइकल रेडीक्युलोपैथी, डिजरनेरेटिव डिस्क, फैसिट जॉइन्ट सिंड्रोम, माइलोपैथी, लंबर कैनाल स्टेनोसिस, स्पॉन्डिलाइटिस आदि में कारगर है।

जो रोगी ऑपरेशन करवा चुके हैं उसमें भी यह कारगर है ?
यदि ऑपरेशन के बाद दबाव बना रहता या दोबारा दबाव आ जाता है तो उसमें भी यह तकनीकी कारगर है।

किस उम्र के लिये यह चिकित्सा है?
15 से 85 वर्ष के मरीजों के लिये।

एक डिस्क लेवल के ट्रीटमेंट में कितना खर्च आता है?
स्पाइन सर्जरी में जहां 3 लाख तक का खर्चा आता है वहीं यह उपचार मात्र 20000 तक में हो जाता है। विदेशों में इसका खर्च 50 गुना तक है।

कितने समय में रोगी घर जा सकता है?
एक घण्टे बाद ही घर जा सकता है। जबकि सर्जरी में 3 माह तक रोगी को अपने काम से अलग रहकर आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है।

इस ट्रीटमेंट की सफलता की दर कितनी है?
90 से 95% सफल है। अब तक लगभग 7,500 मरीज हमेशा के लिए ठीक हो चुके हैं। यह इंजेक्शन प्रॉब्लम साइट में लगाया जाता है।

इस ट्रीटमेंट का असर कब तक रहता है?
इसमें जड़ से इलाज होता है।

क्या यह स्टेरॉइड इंजेक्शन है?
नहीं, यह एक भ्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक **विशेष मशीन** की निगरानी में किया जाता है।

NBC@

डॉ. प्रमोद पहारिया
स्पाइन सर्जन
MBBS, D.Ortho, DNB, M.Ch. (Ortho)
पूर्व सर्जन- सर गंगाराम हॉस्पिटल एवं इंडियन स्पाइनल इंज्यूरी सेन्टर, नई दिल्ली
देहली हॉस्पीटल, ओल्ड श्री टॉकीज, बारादरी, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
समय: दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक
व्हाट्सएप पर रिपोर्ट भेजकर ही संपर्क करें
सम्पर्क – 7354858466 | www.nonsurgicalspinecentre.in

स्पेशलः इंजीनियर्स डे, 15 सितंबर

पिछली सदी में हुए भारत के महान सिविल इंजीनियर एम. विश्वेश्वरैया की जयंती को इंजीनियर्स डे के रूप में मनाते हैं। इस अवसर पर हम आपको बता रहे हैं देश के अलग-अलग इलाकों में स्थित कुछ ऐसे निर्माणों के बारे में, जो इंजीनियरिंग की शानदार मिसाल पेश करते हैं। इनकी विशेषताओं के बारे में जानकर आप अचरज किए बिना नहीं रह पाएंगे।

देश में कई जगह मौजूद हैं इंजीनियरिंग के गौरवशाली प्रतीक

चिनाब पुल जम्मू-कश्मीर के रियासी में

बांद्रा-वर्ली सी लिंक मुंबई में

बेमिसाल

शिखर चंद जैन

अपने देश के अलग-अलग क्षेत्रों में निर्मित किए गए इंजीनियरिंग के ये नायाब नमूने हर किसी को हैरान कर देते हैं। ये गौरवशाली प्रतीक भारतीय इंजीनियरिंग की नई प्रगति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

चिनाब रेलवे ब्रिज

जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में स्थित यह विश्व का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। यह 359 मीटर ऊंचा है। अनूठा चिनाब ब्रिज पेरिस के एफिल टॉवर से भी 35 मीटर ऊंचा है। इसका निर्माण कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन और इंजीनियरिंग संस्थान आईआईएससी बेंगलुरु द्वारा किया गया है। आईआईटी दिल्ली और आईआईटी रुड़की ने इसकी भूकंप सहनशीलता का विश्लेषण किया, जबकि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने इसके विस्फोट-प्रतिरोधी होने की पुष्टि की।
यह 8 तीव्रता तक के भूकंप के झटके, 40 टन टीएनटी तक का विस्फोट, -20 डिग्री सेल्सियस तक तापमान और 266 किमी. प्रति घंटा की गति वाली आंधी को सहन करने की क्षमता रखता है। दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल माना जाने वाला चिनाब पुल, जम्मू और कश्मीर के रियासी जिले में बक्कल और कौरी के बीच स्थित है। यह उधमपुर, श्रीनगर, बारामुला रेलवे लिंक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उद्देश्य जम्मू और कश्मीर को शेष भारत से जोड़ना है। इसके कारण क्षेत्र में कनेक्टिविटी काफी सुविधाजनक हो गई है।

स्टेच्यू ऑफ इक्वेलिटी

हैदराबाद (तेलंगाना) में स्थित यह विशाल प्रतिमा 11वीं शताब्दी के वैष्णव संत श्री रामानुजाचार्य की है। 5 फरवरी 2019 को, भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने इस प्रतिमा का अनावरण किया। यह प्रतिमा समानता, न्याय और करुणा के उस दृष्टिकोण का प्रतीक है, जिसका उपदेश श्री रामानुजाचार्य ने मानवता को दिया था। स्टेच्यू ऑफ इक्वेलिटी की ऊंचाई 216 फीट है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थित स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी प्रतिमा है। यह मूर्ति एक विशेष कांस्य मिश्र धातु से बनी है, जिसे पंच धातु कहा जाता है।

इसमें श्री रामानुजाचार्य को बैठी हुई मुद्रा, कमल मुद्रा, पद्मासन और पारंपरिक मुद्रा में दर्शाया गया है, जो शांति और ध्यान दोनों का प्रतीक माना जाता है। यह प्रतिमा 54 फुट ऊंचे चबूतरे पर स्थापित है, जिस पर संग्रहालय और अनुसंधान केंद्र स्थित हैं। यह चबूतरा रामानुजाचार्य के संदेश के स्तंभों और आधुनिक विश्व में उनकी प्रासंगिकता का प्रतीक है। यह समाज में समानता और देश में एकता का प्रतीक भी है। इसके चारों ओर एक मंदिर परिसर और आगंतुकों के लिए एक उच्च-तकनीकी केंद्र है। यह प्रतिमा और परिसर इंजीनियरिंग के अद्भुत कौशल का प्रदर्शन करता है।

बांद्रा-वर्ली सी लिंक

मुंबई में रहने वाले बहुत से निवासी बांद्रा-वर्ली सी लिंक के जरिए यात्रा करते हैं। यह शानदार केबल-स्टेड ब्रिज भारत की आधुनिक इंजीनियरिंग विशेषज्ञता का एक अनुपम उदाहरण है। 5.6 किलोमीटर लंबा यह पुल बांद्रा और वर्ली के व्यस्त उपनगरों को जोड़ता है, जिससे शहर की भीड़-भाड़ वाली सड़कों पर सफर का समय कम हो जाता है। केबलों को थामे रखने वाले विशाल खंभे समुद्र तल से 128 मीटर ऊपर हैं। 66 फीट चौड़े इस ब्रिज पर आठ लेन में आवागमन होता है। वर्ष 2000 में इसका निर्माण शुरू हुआ और वर्ष 2010 में यह आम जनता के लिए खोल दिया गया।

पीर पंजाल अटल रेलवे सुरंग

वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा '10,000 फीट से ऊपर दुनिया की सबसे लंबी राजमार्ग सुरंग' के रूप में दर्ज, अटल सुरंग हिमाचल प्रदेश में मनाली-लेह राजमार्ग पर रोहतांग दर्रे के नीचे स्थित है। चुनौतीपूर्ण भू-भाग और जमा देने वाले तापमान में निर्मित, 9.02 किलोमीटर लंबी इस सुरंग को रोहतांग सुरंग के नाम से भी जाना जाता है। इसका निर्माण सर्दियों के महीनों में राजमार्ग के बंद होने की समस्या को दूर करने के लिए किया गया है, जिससे लाहौल और स्पीति अलग-थलग पड़ जाते थे। सुरंग के निर्माण से मनाली-केलांग मार्ग की दूरी 46 किलोमीटर कम हो गई है, जिससे इस दूरी की यात्रा का समय लगभग चार से पांच

घंटे कम हो गया है। हिमालय में पीर पंजाल पर्वतमाला की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों को देखते हुए, इस सुरंग के निर्माण के लिए उत्कृष्ट तकनीकी और इंजीनियरिंग कौशल का उपयोग किया गया। यह प्रभावशाली परियोजना आधुनिक सिविल इंजीनियरिंग में भारत की विशेषज्ञता का गौरव है और भारत के सर्वश्रेष्ठ सिविल इंजीनियरिंग चमत्कारों में से एक है। *

धीरूभाई अंबानी इंटरनेशनल स्कूल

मुंबई, महाराष्ट्र में स्थित यह एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय स्कूल है। यहां वर्षाजल का संचयन और ऊर्जा संरक्षण सहित समकालीन वास्तुकला सुविधाएं मौजूद हैं। डिजाइन से संबंधित आधुनिक विशेषताओं के लिए इसे सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में से एक माना जाता है क्योंकि यह स्थिरता के बारे में बहुत कुछ कहता है। स्कूल ने हाल ही में अत्याधुनिक सुविधाओं को शामिल किया है, जिसमें सौर पैनल और जल पुनर्चक्रण प्रणालियों सहित एडवांस्ड ग्रीन टेक्नोलॉजी का उपयोग किया गया है। अत्याधुनिक कक्षाएं और इंटरेक्टिव शिक्षण वातावरण एक सुव्यवस्थित परिसर में जोड़े गए हैं, जो पर्यावरणीय जिम्मेदारी के साथ शिक्षा में उत्कृष्टता पर जोर देते हैं। इंजीनियर्स के योगदान से ही इसका निर्माण संभव हो पाया है।

तेलंगाना राज्य का प्रसिद्ध लोक-महोत्सव बतकम्मा, महिलाओं के सम्मान और प्रकृति से जुड़ाव का प्रतीक पर्व है। भादपद अमावस्या से शुरू होकर दुर्गाष्टमी तक नौ दिनों तक मनाए जाने वाले इस उत्सव के दौरान कला, संस्कृति और प्रकृति के आपसी जुड़ाव की निराली छटा दिखती है।

स्त्री सम्मान-प्रकृति प्रेम का प्रतीक लोक-महोत्सव बतकम्मा

सांस्कृतिक पर्व

सरिता सुराणा

हमारे देश में वर्ष भर त्योहारों का मेला लगा रहता है। सभी क्षेत्र, जाति और धर्म के लोग उत्साह-उमंग से विभिन्न पर्व मनाते हैं। लेकिन अलग-अलग राज्यों में भी अपने-अपने कुछ विशेष त्योहार मनाए जाते हैं। उन्ही में से एक है बतकम्मा पर्व। इसे तेलंगाना राज्य की महिलाएं मनाती हैं।

वातावरण में लहराती हैं स्वर लहरियां

छिन्निमा बतकम्मा, छिन्नारक्का बतकम्मा,
दादी मां बतकम्मा, दामेरमुतक्कल बतकम्मा।

ऐसे गीतों की मधुर स्वर लहरियां जब वातावरण में गूंजने लगती हैं तो समझ आ जाता है कि बतकम्मा पर्व आ गया है और संपूर्ण तेलंगाना में मातृशक्ति के प्रति सम्मान और प्रकृति प्रेम का सैलाब उमड़ रहा है।

इस पर्व में एक प्रतीकात्मक पुष्पों की प्रतिमा बनाई जाती है, जिसे बनाने के लिए कई रंगों के फूलों का उपयोग किया जाता है। इसलिए इसे रंगों का त्योहार भी माना जाता है। पूरे तेलंगाना में यह बतकम्मा पर्व नौ दिनों तक मनाया जाता है। इसमें बहुत सुंदर तरीके से फूलों से अलग-अलग आकृतियां बनाई जाती हैं, इसमें प्रयोग किए जाने वाले ज्यादातर फूल आयुर्वेदिक दृष्टि से भी उपयोगी होते हैं। इसमें फूलों से सात परतों से मंदिर के गोपुरम जैसी आकृति बनाई जाती है। तेलुगु भाषा में बतकम्मा का मतलब होता है, देवी मां जिंदा हैं। इस दिन बतकम्मा को महागौरी के रूप में पूजा जाता है, यह पर्व स्त्रियों के सम्मान के रूप में मनाया जाता है।

कब मनाया जाता है: हिंदू पंचांग के अनुसार यह पर्व श्राद्ध पक्ष, भादो की अमावस्या, जिसे महालय अमावस्या भी कहते हैं, के दिन शुरू होता है और नवरात्र की अष्टमी के दिन खत्म होता है। ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार यह सितंबर-अक्टूबर महीने में मनाया जाता है। इस वर्ष यह पर्व 21 से 30 सितंबर तक मनाया जाएगा। यह मानसून के अंत में शुरू होकर शीत ऋतु के प्रारंभ तक मनाया जाता है।

ऐसे मनाते हैं पर्व: इस पर्व में फूलों से एक बड़े पर्वत जैसी आकृति बनाई जाती है। इसके सबसे ऊपरी भाग में हल्दी से गौरम्मा बनाकर उसे रखा जाता है। इस दौरान नाच-गाने का आयोजन किया जाता है। बतकम्मा का नाम बृहदाम्मा से ही उत्पन्न हुआ है। माना जाता है कि भगवान शिव-पार्वती को प्रसन्न करने के लिए यह त्योहार 1000 साल से उसी इलाके (वर्तमान तेलंगाना) में बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है।

जताते हैं प्रकृति के प्रति आभार: वर्षा ऋतु में सभी जगह पानी का प्रवाह होता है। नदी, तालाब एवं कुएं पानी से भर जाते हैं। उसके बाद धरती पर फूलों के रूप में पर्यावरण में बहार आ जाती है। इसी कारण प्रकृति का धन्यवाद देने के लिए तरह-तरह के फूलों के साथ इस पर्व को मनाया जाता है। इस त्योहार को मनाने के लिए नव विवाहिताएं अपने मायके भी आती हैं। मान्यता है कि उनके जीवन में परिवर्तन लाने के लिए यह प्रथा शुरू की गई थी।

पर्व के शुरुआती पांच दिनों में महिलाएं अपने घर का आंगन स्वच्छ करती हैं और उसको गोबर से लीपा जाता है। सुबह जल्दी उठ कर उस आंगन में सुंदर-सुंदर मुग्गु बनाती हैं। कई जगह पर ऐप्पन से चौक बनाया जाता है, जिसमें सुंदर कलाकृति बनाई जाती है। चावल के आटे से बनी रंगोली का भी बहुत महत्त्व है। इस उत्सव में घर के पुरुष बाहर से नाना प्रकार के फूल एकत्र करते हैं, जिसमें सलोसिया, सेन्ना, मेरीगोल्ड, कमल, ककुर्बिता, कुकुमिस और बहुत से अन्य फूलों को एकत्रित किया जाता है। फूलों की तरह-तरह की परतें बनाई जाती हैं, उनके नीचे फूलों की पत्तियों से सजाया जाता है, इसे थंबलम के नाम से जाना जाता है। नौ दिन तक हर शाम महिलाएं और लड़कियां एकत्रित होकर नाचती, गाती हैं, ढोल बजाए जाते हैं। सब अपने-अपने बतकम्मा को लेकर आती हैं। इस दौरान महिलाएं पारंपरिक साड़ी, गहने पहनती हैं और लड़कियां लहंगा चोली पहनती हैं। सभी महिलाएं बतकम्मा के चारों ओर गोला बनाकर क्षेत्रीय भाषा में गीत गाती हैं। महिलाएं अपने परिवार की सुख-समृद्धि और खुशहाली के लिए माता पार्वती से प्रार्थना करती हैं। अष्टमी पूजा के बाद बतकम्मा को तालाब के पानी में विसर्जित कर दिया जाता है। *

किसी भी ग्रह से टूटकर पृथ्वी पर गिरे उल्कापिंड उस ग्रह के इतिहास और उसकी संरचना को समझने में मदद करते हैं। इसका उपयोग गहनों एवं सजावटी वस्तुओं में भी किया जाता है। यही वजह है कि ग्रहों के इन टुकड़ों की कीमत बहुत अधिक होती है। जानिए इस बारे में विस्तार से।

महत्वपूर्ण और कीमती होते हैं ग्रहों से टूटकर गिरे उल्कापिंड

रोचक

अंजू जैन

हाल ही में मंगल ग्रह से आए एक उल्कापिंड, NWA 16788, की न्यूयॉर्क में 'गीक वीक 2025' नीलामी हुई है। यह उल्कापिंड पृथ्वी पर पाया गया अब तक का सबसे बड़ा मंगल ग्रह का टुकड़ा माना जाता है, जिसका वजन 24.5 किलोग्राम है। इसकी अनुमानित कीमत 15 से 30 करोड़ रुपए (लगभग 1.8 से 3.6 मिलियन अमेरिकी डॉलर) के बीच है।

क्या है NWA 16788: यह एक शर्गोटाइट उल्कापिंड है, जो मंगल ग्रह की भूगर्भीय संरचना के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देता है। यह सहारा रेगिस्तान में पाया गया था और मंगल ग्रह की सतह से उत्पन्न हुआ माना जाता है। इसकी सतह पर लाल-भूरी फ्यूजन क्रस्ट है, जो अंतरिक्ष में इसकी यात्रा के दौरान उच्च तापमान के कारण बनी। यह मंगल ग्रह की मिट्टी से बना है और इसकी उम्र लगभग 74.2 करोड़ साल पुरानी बताई जाती है।

वैज्ञानिक महत्व: यह उल्कापिंड मंगल ग्रह के इतिहास और संरचना को समझने में मदद करता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह उस समय के मंगल ग्रह की सतह का हिस्सा हो सकता है, जब वहां पानी मौजूद था।

मूल्य और विशेषता: इसकी कीमत 15 से 30 करोड़ रुपए के बीच अनुमानित है, जो इसे अब तक के सबसे महंगे उल्कापिंडों में से एक बनाता है।

क्यों होते हैं इतने महंगे: ग्रहों या उल्काओं से टूट कर पृथ्वी पर गिरे टुकड़े, जिन्हें उल्कापिंड कहा जाता है, कई कारणों से महंगे होते हैं। इनमें शामिल हैं-

दुर्लभता: उल्कापिंड अंतरिक्ष से पृथ्वी पर बहुत कम मात्रा में पहुंचते हैं। इनमें से कुछ विशेष प्रकार, जैसे चंद्रमा या मंगल ग्रह से आए उल्कापिंड, अत्यंत दुर्लभ होते हैं, जिससे उनकी कीमत बढ़ जाती है।

वैज्ञानिक महत्व: उल्कापिंड ग्रहों की उत्पत्ति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। वैज्ञानिक इनका अध्ययन ग्रहों की भौतिक-रासायनिक संरचना और प्राचीन इतिहास को समझने के लिए करते हैं, जिससे इनकी मांग बढ़ती है।

सौंदर्य और संग्रहणीयता: कुछ उल्कापिंडों में अनोखे पैटर्न (जैसे विडमैनस्टेटेन पैटर्न) या रंग होते हैं, इस कारण इनका उपयोग गहनों या सजावटी वस्तुओं के निर्माण में भी किया जाता है।

उत्पत्ति: चंद्रमा, मंगल या विशिष्ट क्षुद्रग्रहों से आए उल्कापिंड अत्यंत मूल्यवान होते हैं, क्योंकि ये पृथ्वी के बाहर की सामग्री होते हैं। उल्कापिंडों को खोजने, पुनर्प्राप्त करने और उनकी प्रामाणिकता सत्यापित करने में समय, संसाधन और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व: कुछ संस्कृतियों में उल्कापिंडों को पवित्र माना जाता है, जैसे भारत में कुछ प्राचीन मंदिरों में रखे गए उल्कापिंड।

ग्रहों के टुकड़ों के प्रकार: ग्रहों से टूट कर पृथ्वी पर गिरे टुकड़ों के कई प्रकार होते हैं, जैसे-

उल्का पिंड: जब उल्का पृथ्वी के वायुमंडल से गुजर कर सतह पर पहुंचती है, तो उसे उल्कापिंड कहते हैं।

उल्का: अंतरिक्ष से पृथ्वी की ओर आने वाला पदार्थ जो वायुमंडल में जलता है और 'टूटता तारा' जैसा दिखता है।

क्षुद्रग्रह: अंतरिक्ष में चक्कर लगाने वाले बड़े चट्टानी पदार्थ, जिनके टुकड़े उल्कापिंड के रूप में पृथ्वी पर गिर सकते हैं।

चंद्र उल्का पिंड: चंद्रमा से उत्पन्न होने वाले उल्का पिंड।

मंगल उल्का पिंड: मंगल ग्रह से आए उल्कापिंड।

पैलासाइट: लोहे और सिलिकेट खनिजों से बने विशेष उल्का पिंड, जो अकसर सुंदर क्रिस्टल पैटर्न दिखाते हैं।

कोन्ड्राइट: सबसे आम उल्कापिंड, जिनमें सौरमंडल की प्राचीन सामग्री होती है।

इनके अलावा भी विभिन्न ग्रहों से टूटकर गिरे टुकड़ों या उल्कापिंडों के अलग-अलग कई प्रकार एवं अलग-अलग नाम होते हैं।

अब हम आपको अब तक मिले कुछ बेहद महत्वपूर्ण उल्कापिंड और उनकी कीमत के बारे में बताते हैं।

होबा उल्कापिंड: नामीबिया में 1920 ई. में पाया गया लगभग 60 टन वजनी यह उल्कापिंड अब तक का ज्ञात सबसे बड़ा एकल उल्कापिंड है। इसका बाजार मूल्य निर्धारित नहीं है, क्योंकि यह वहां की राष्ट्रीय संपत्ति है, लेकिन इसकी कीमत अरबों रुपए हो सकती है।

फुकांग पैलासाइट: साल 2000 में चीन में पाया गया यह उल्का पिंड पैलासाइट (लोहा और ओलिवाइन क्रिस्टल) कैटेगरी का है। यह अपने सुंदर क्रिस्टल पैटर्न के लिए प्रसिद्ध है। इस उल्कापिंड के इसके छोटे टुकड़ों की कीमत 20 से 50 डॉलर प्रति ग्राम तक हो सकती है।

चेल्याबिंस्क उल्कापिंड: साल 2013 में रूस में गिरा साधारण कोन्ड्राइट प्रकार का यह उल्का पिंड एक खास वजह से प्रसिद्ध है। दरअसल, 2013 में इसके गिरने से एक बड़ा विस्फोट हुआ था, जिसने इसे विश्व प्रसिद्ध बनाया। इसके टुकड़ों की कीमत 1 से 10 डॉलर प्रति ग्राम तक रही है।

नखला उल्कापिंड: मिस्र में साल 1911 में गिरा यह उल्कापिंड मंगल ग्रह से गिरे होने की पुष्टि वाला पहला उल्कापिंड है। इसकी कीमत प्रति ग्राम 100 से 300 डॉलर तक तक हो सकती है।

एलेंडे उल्कापिंड: मैक्सिको में 1969 ई. में गिरे कार्बोनेशियस कोन्ड्राइट प्रकार के इस उल्कापिंड में सौरमंडल की सबसे प्राचीन सामग्री और कार्बनिक यौगिक पाए गए हैं, जो जीवन की उत्पत्ति के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसकी कीमत प्रति ग्राम 1 से 5 डॉलर अनुमानित है। लेकिन इसके दुर्लभ टुकड़ों की कीमत अधिक हो सकती है। *

बॉलीवुड फिल्मों की बात करें तो शुरुआत से लेकर अब तक की फिल्मी संवाद की भाषा हिंदी में अनेक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। हर अदाकार अपने अंदाज में हिंदी तो बोलता ही है, समय और पीढ़ी के अनुसार भी इसमें बदलाव आते रहे हैं। इन बदलावों पर एक नजर।

पहले के दौर से कितनी बदली बॉलीवुड फिल्मों की हिंदी

'राजी' में आलिया भट्ट के संवाद रहे असरदार

क्षेत्रीय प्रभाव से मुक्त हैं 'गुड लक जेरी' के संवाद

सिने संवाद

डी.जे. नंदन

अगर आप हिंदी फिल्मों के शौकीन हैं तो बॉलीवुड फिल्मों में बोली जाने वाली आज की हिंदी में पिछली सदी के पचास, साठ, सत्तर और अस्सी के दशकों की बॉलीवुड फिल्मों में बोली जाने वाली हिंदी से कुछ अंतर महसूस करते होंगे। क्या फर्क है तब और अब की फिल्मों की हिंदी में, एक दृष्टि डालते हैं।

बीते दौर की बॉलीवुड फिल्मों में हिंदी: पिछली सदी के सत्तर और अस्सी के दशक के एक्टर्स की बात करें तो अमिताभ बच्चन की हिंदी बहुत समृद्ध थी, साथ ही उसमें हमेशा 'संवाद अदायगी' का एक मंचीय असर दिखता था। उनसे पूर्व दिलीप कुमार के संवाद इतने अधिक अभिनय केंद्रित हुआ करते थे कि दर्शक डायलॉग्स को सुनने की बजाय देखने लगता था। दिलीप कुमार के संवादों में हिंदी-उर्दू मिश्रित भाषा देखने को मिलती है।

'उधम सिंह' में विक्की कौशल

ऐसे ही अभिनेता राजकुमार की संवाद अदायगी में उर्दू-शैली का असर दिखता था, जो उनकी अभिजातीय छवि का हिस्सा बनता था। उदाहरण के तौर पर फिल्म 'पाकीजा' में उनकी संवाद अदायगी को देखा जा सकता है। अपने जमाने में राजेश खन्ना या शत्रुघ्न सिन्हा जैसे अभिनेता अकसर अपने मूल क्षेत्रीय लहजों को पूरी तरह छोड़े बिना हिंदी बोलते थे। यह उस दौर में 'स्वाभाविक' ही माना जाता था।

अपने दौर की बेहतरीन अभिनेत्री स्मिता पाटिल भाषा को साधने में माहिर थीं। वह बहुत अच्छी हिंदी बोलती थीं। उनके द्वारा बोले गए संवाद बहुत गूंजदार, ठहराव से भरे होते थे। उनके संवादों में लयात्मकता होती थी और इसमें कविताई का आभास होता था। समग्रता में देखा जाए तो पिछली सदी के 70 और 80 के दशक में अभिनेता हिंदी को एक खास छंद, ठहराव और 'दबाव' के साथ बोलते थे। यह एक 'शास्त्रीय लहजा' था, जो दिलीप कुमार, अमिताभ बच्चन, शबाना आजमी, स्मिता पाटिल आदि कलाकारों की संवाद अदायगी में दिखता था।

आज के फिल्मों की हिंदी: हर दौर की अपनी एक अलग भाषा, संवाद का एक अलग सलीका होता है। यह बात हिंदी फिल्मों पर भी लागू होती है। आज की फिल्मों की हिंदी पहले की फिल्मों से बेहतर भले न हो, यह पहले की तुलना में अलग जरूर है और असरदार भी। आज फिल्मों में बोली जाने वाली हिंदी ज्यादा लचीली, संवादधर्मी और ग्लोबल शहरी अनुभव से जुड़ी है। यह किसी खास उच्चारण और लहजे में नहीं बोली जाती बल्कि यह हमारे-आपके जैसे सामान्य लोगों की तरह ही बोली जाती है।

हिंदी बोलने में दिखता है आत्मविश्वास: आज की पीढ़ी के अभिनेता और अभिनेत्रियां हिंदी को पूरे आत्मविश्वास से बोलते हैं। उदाहरण के तौर पर फिल्म 'सरदार उधम सिंह' के संवाद 'जो लहू नहीं खौला, वो लहू नहीं...' को देखा जा सकता है। फिल्म में विक्की कौशल पूरे आत्मविश्वास और गहराई के साथ हिंदी बोलते हैं। न संवादों में कोई बनावट, न हिचक। फिल्म के संवादों के उच्चारण में हिंदी की शुद्धता भले गायब हो, लेकिन हिंदी के लिए गर्व और सहजता यहां साफ देखा जा सकता है।

दिखता है सहज भाषाई प्रवाह: आज की बॉलीवुड फिल्मों में सहज भाषाई प्रवाह दिखता है। इसका एक खूबसूरत उदाहरण आलिया भट्ट की फिल्म 'राजी' है। इस फिल्म में एक कश्मीरी लड़की की भूमिका निभाते हुए आलिया ने जिस तरह की हिंदी बोली है, उसमें पानी जैसा बहाव है। कोई भी शब्द या संवाद अतिरिक्त जोर देकर नहीं बोला गया था, फिर भी ये असरदार थे।

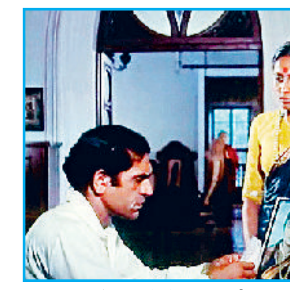
भाषा को साधने में माहिर थीं स्मिता पाटिल

क्षेत्रीय प्रभाव से मुक्त हिंदी: आज के दौर की फिल्मों में बोली जाने वाली हिंदी की एक और खास बात यह है कि आज के ज्यादातर अभिनेताओं और अभिनेत्रियों का उच्चारण और लहजा क्षेत्रीयता से मुक्त है। उदाहरण के तौर पर जान्हवी कपूर की 'गुड लक जेरी' को देखा जा सकता है। फिल्म में जान्हवी को बिहारी-पंजाबी पृष्ठभूमि का दिखाया गया है, फिर भी उनका उच्चारण क्षेत्रीयता से मुक्त 'न्यूट्रल शहरी हिंदी' जैसा है।

कैजुअल फ्लुएंसी पर जोर: आज के अभिनेताओं को मंचीय प्रशिक्षण, स्क्रिप्ट वर्कशॉप्स और संवाद को स्वाभाविक बनाने की ट्रेनिंग मिलती है। आज के दौर में संवाद अदायगी की नाटकीय शैली के स्थान पर रोजमर्रा की जिंदगी में बोली जाने वाली हिंदी और इसकी कैजुअल फ्लुएंसी पर जोर दिया जाता है। विक्की कौशल, राजकुमार राव, तापसी पन्नू, भूमि पेडनेकर, ये सभी संवादों में हिंदी को आत्मसात करके बोलते हैं। ये हिंदी को 'परफॉर्म' नहीं करते, बल्कि 'जीते' हैं।

कुल मिलाकर, फिल्मों में आज की पीढ़ी की हिंदी ज्यादा कैजुअल, लचीली और वास्तविक जिंदगी से जुड़ी लगती है। पहले के फिल्मों की हिंदी भाषा में 'भाषाई सौंदर्य' था, आज के फिल्मों की हिंदी में 'संवादिक सहजता' है। *